वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष:6 अंक: 66 बुधवार 12 अगस्त 2026 | दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

कमेटी ऑफ सेक्रेटरीज की बैठक: रिफॉर्म उत्सव बनेगा सुशासन, प्रक्रियागत सुधार और बेहतर सेवा प्रदायगी का माध्यम

आमजन को बेहतर सेवाएं देने के लिए प्रक्रियाओं को सरल बनाएं: श्रीनिवास

जन- अभियोगों के समयबद्ध एवं गुणवत्तापूर्ण निस्तारण पर फोकस, नागरिक संतुष्टि में सुधार

मुख्य सचिव वी. श्रीनिवास ने मंगलवार को शासन सचिवालय में आयोजित कमेटी ऑफ सेक्रेटरीज की बैठक की अध्यक्षता की। बैठक में रिफॉर्म उत्सव, केन्द्र प्रवर्तित योजनाओं में व्यय, हर घर तिरंगा अभियान-2026, जन-अभियोग निस्तारण एवं राजस्थान सम्पर्क 181 तथा मिशन हरियालो राजस्थान सहित विभिन्न महत्वपूर्ण विषयों की समीक्षा की गई।

जयपुर. शाबाश इंडिया

मुख्य सचिव वी. श्रीनिवास ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आह्वान पर देशभर में आयोजित होने वाला रिफॉर्म उत्सव जनभागीदारी से शासन व्यवस्था में सुधार की महत्वपूर्ण पहल है। उन्होंने कहा कि आमजन के अनुभवों और सुझावों को आधार बनाकर प्रक्रियाओं को सरल तथा सेवा प्रदायगी को अधिक सुगम एवं प्रभावी बनाया जाए। सभी विभाग ऐसे नीतिगत एवं प्रक्रियागत सुधारों की पहचान करें, जिनसे बड़ी संख्या में नागरिकों को प्रत्यक्ष लाभ मिले और सरकारी सेवाओं तक उनकी पहुंच आसान हो। मुख्य सचिव ने कहा कि रिफॉर्म उत्सव के तहत जन मंथन, विमर्श और जन समाधान की चरणबद्ध प्रक्रिया के माध्यम से नागरिकों से प्राप्त उपयोगी सुझावों को व्यावहारिक सुधारों में बदला जाएगा। राज्य कार्ययोजना 10 सितंबर तक तैयार कर प्रस्तुत की जाएगी, 11 सितंबर से जन-जागरूकता अभियान शुरू होगा तथा 2 अक्टूबर को प्रदेश की प्रत्येक पंचायत में जन मंथन सभा आयोजित कर आमजन को सुधार प्रक्रिया से जोड़ा जाएगा। उन्होंने कहा कि योजना विभाग रिफॉर्म उत्सव का नोडल विभाग होगा। जिलों के प्रभारी सचिव तैयारियों की नियमित समीक्षा करते हुए केन्द्र सरकार के संबंधित मंत्रालयों से समन्वय सुनिश्चित करेंगे। युवा मामले विभाग के माध्यम से युवाओं की व्यापक भागीदारी सुनिश्चित की जाएगी। मुख्य सचिव ने सरकारी प्रक्रियाओं को और सरल बनाने के लिए एकल आवेदन प्रपत्र विकसित करने की संभावनाओं पर भी कार्य करने के निर्देश दिए।

केन्द्र प्रवर्तित योजनाओं में उपलब्ध राशि का समयबद्ध उपयोग सुनिश्चित करें

मुख्य सचिव ने केन्द्र प्रवर्तित योजनाओं की वित्तीय प्रगति की समीक्षा करते हुए लंबित केंद्रीय स्वीकृतियां शीघ्र प्राप्त करने और महत्वपूर्ण योजनाओं के संबंध में डी.ओ. लेटर भेजने के निर्देश दिए। उन्होंने वित्तीय एवं भौतिक प्रगति नियमित रूप से अपडेट करने, उपयोगिता प्रमाण-पत्र समय पर भेजने तथा केन्द्र से स्वीकृति के बाद राज्यांश शीघ्र जारी करने को कहा। उन्होंने विभागों को योजनाओं एवं उपलब्धियों का प्रभावी संप्रेषण सुनिश्चित करने तथा गलत अथवा भ्रामक जानकारी सामने आने पर तथ्यों पर आधारित जानकारी समय पर आमजन के समक्ष रखने के निर्देश दिए। मुख्य सचिव ने मिशन हरियालो राजस्थान के तहत पौधरोपण लक्ष्यों एवं उपलब्धियों की समीक्षा करते हुए पौधों के संरक्षण और सत्यापन पर भी विशेष ध्यान देने के निर्देश दिए। बैठक में बताया गया कि वर्ष 2026-27 में 10.81 करोड़ पौधे लगाने के लक्ष्य के विरुद्ध 10 अगस्त तक करीब 4.85 करोड़ पौधे लगाए जा चुके हैं। उन्होंने कम प्रगति वाले विभागों एवं जिलों को पौधरोपण में तेजी लाने, जिला कलक्टरों को प्रभावी समन्वय करने तथा पूर्व वर्षों में लगाए गए पौधों के सत्यापन में तेजी लाने के निर्देश दिए।

जन-अभियोगों में वास्तविक समाधान और नागरिक संतुष्टि हो प्राथमिकता

मुख्य सचिव ने राजस्थान सम्पर्क 181 के माध्यम से प्राप्त जन-अभियोगों की समीक्षा करते हुए कहा कि शिकायत निस्तारण का उद्देश्य आमजन को वास्तविक राहत देना होना चाहिए। समयबद्ध एवं गुणवत्तापूर्ण समाधान के साथ नागरिक संतुष्टि को प्राथमिकता दी जाए तथा विभागीय सचिव एवं जिला कलक्टर लंबित प्रकरणों की नियमित समीक्षा करें। बैठक में बताया गया कि 1 फरवरी से 31 जुलाई 2026 के दौरान 24.64 लाख से अधिक जन-अभियोग दर्ज हुए, जबकि बैकलॉग सहित 25.04 लाख से अधिक प्रकरणों का निस्तारण किया गया। नागरिक संतुष्टि 63.16 प्रतिशत से बढ़कर 67.29 प्रतिशत हुई है और औसत निस्तारण अवधि 15 दिन से घटकर 13 दिन रह गई है। नागरिक सुविधाओं से संबंधित शिकायतों में संतुष्टि 74.75 प्रतिशत रही। मुख्य सचिव ने बिजली, पानी, सड़क और स्वच्छता से संबंधित शिकायतों की प्रभावी मॉनिटरिंग तथा समय, गुणवत्ता और नागरिक संतुष्टि के आधार पर विभागों एवं जिलों के प्रदर्शन में निरंतर सुधार के निर्देश दिए।

हर घर तिरंगा
21 लाख लोगों की भागीदारी

मुख्य सचिव ने हर घर तिरंगा अभियान-2026 के तहत 9 से 17 अगस्त तक आयोजित गतिविधियों में व्यापक जनभागीदारी सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। बैठक में बताया गया कि 9 अगस्त को 12 हजार 609 प्रभात फेरियों में 11.20 लाख से अधिक तथा 10 अगस्त को 12 हजार 917 तिरंगा रैलियों में 9.84 लाख से अधिक लोगों ने भाग लिया। इस प्रकार दो दिनों में ही 21 लाख से अधिक लोगों की सहभागिता रही। पोर्टल पर 40 हजार से अधिक सेल्फी भी अपलोड की जा चुकी हैं। मुख्य सचिव ने वंदे मातरम् के 150 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में गतिविधियों को जनभागीदारी से जोड़ने तथा 13 एवं 14 अगस्त को विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस से संबंधित कार्यक्रम गरिमापूर्ण ढंग से आयोजित करने के निर्देश दिए।

हाई वाइब क्लब ने मनाई रंग-बिरंगी लहरिया तीज

जयपुर. शाबाश इंडिया

हाई वाइब क्लब द्वारा 8 अगस्त को आकारा रेस्टोरेंट में रंग-बिरंगी लहरिया तीज का शानदार कार्यक्रम आयोजित किया गया। सावन की फुहार, लहरिया के रंग और ढेर सारी मस्ती के साथ आयोजित यह समारोह खूबसूरत एवं यादगार रहा। कार्यक्रम की सफलता में हाई वाइब टीम की फाउंडर रश्मि जैन, मीनाक्षी सोगानी, सीमा गोधा, डॉली जैन एवं निधि जैन का विशेष योगदान रहा। टीम की ओर से विभिन्न गेम्स के विजेता सदस्यों को शानदार पुरस्कार वितरित किए गए। वहीं, सभी ग्रुप सदस्यों को प्यार भरे उपहार के रूप में सुंदर छतरियां भेंट की गईं, जो सावन की इस याद को और भी खास बना गईं।

सावन सुंदरी सम्मान

इस अवसर पर रुचिका छाबड़ा को ''सावन सुंदरी'' के सम्मान से नवाजा गया। सभी सदस्यों ने उन्हें बधाई एवं हार्दिक शुभकामनाएं दीं। एंकर शिखा ने अपनी शानदार एंकरिंग से सभी का खूब मनोरंजन किया। उन्होंने मजेदार गेम्स एवं हाउजी खिलाकर पूरे कार्यक्रम को हंसी, मस्ती और उत्साह से भर दिया। सभी सदस्यों के प्यार, उत्साह और सहभागिता ने इस आयोजन को बेहद खूबसूरत एवं यादगार बना दिया।

सैलून एवं ब्यूटी जगत की एकजुटता से बनेगी सशक्त पहचान

राष्ट्रीय सैलून दिवस पर उदयपुर में संगठनों ने तय की हितों की साझा दिशा

उदयपुर. शाबाश इंडिया

सौंदर्य, कौशल और स्वरोजगार से जुड़े सैलून एवं ब्यूटी उद्योग को संगठित, सम्मानजनक और सशक्त पहचान दिलाने के उद्देश्य से राष्ट्रीय सैलून दिवस पर उदयपुर में विभिन्न संगठनों के प्रतिनिधियों की महत्वपूर्ण बैठक आयोजित हुई। इसमें सेन केश कला संस्थान, हेयर एंड ब्यूटी फेडरेशन (एचबीएफ), हेयर एंड ब्यूटी ऑर्गेनाइजेशन राजस्थान तथा लेक सिटी ब्यूटी क्लब उदयपुर सहित कई संगठनों से जुड़े पदाधिकारी और सदस्य शामिल हुए। बैठक में उद्योग की वर्तमान चुनौतियों, व्यवसायियों के हितों, संगठनात्मक विस्तार तथा सरकारी स्तर पर मुद्दों को प्रभावी ढंग से रखने की रणनीति पर विचार-विमर्श किया गया। प्रतिभागियों ने माना कि सैलून एवं ब्यूटी क्षेत्र केवल सौंदर्य सेवाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि यह लाखों परिवारों को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार देने वाला व्यापक उद्योग है। ऐसे में इस क्षेत्र के कुशल कारीगरों और व्यवसायियों की समस्याओं को एक साझा मंच से उठाना समय की आवश्यकता है। हेयर एंड ब्यूटी फेडरेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष अशोक पालीवाल ने कहा कि मजबूत संगठन ही किसी भी पेशे की गरिमा और अधिकारों की रक्षा कर सकता है। उन्होंने सभी संगठनों से मतभेदों से ऊपर उठकर उद्योग हित में संयुक्त प्रयास करने का आह्वान किया। डॉ. हेमंत सेन ने संगठन की एकता को इसकी सबसे बड़ी ताकत बताते हुए कहा कि आपसी समन्वय, संवाद और सक्रिय सदस्यता से ही सैलून व्यवसायियों की आवाज व्यापक स्तर तक पहुंचेगी। उन्होंने युवा व्यवसायियों और प्रशिक्षित ब्यूटी प्रोफेशनल्स को भी संगठनों से जोड़ने पर जोर दिया। बैठक में दिलीप सेन, शम्भूलाल सेन, सुरेश सेन, नंदा भाटिया, भारती सेन, मंजू सेन, जितेंद्र सेन, कैलाश सेन और श्वेताशा पालीवाल ने विचार व्यक्त किए। बाद में सभी ने सदस्यता अभियान को गति देने, आगामी कार्यक्रमों की रूपरेखा बनाने तथा सैलून एवं ब्यूटी व्यवसाय से जुड़े अधिकाधिक लोगों को संगठन से जोड़ने का संकल्प लिया।

रिपोर्ट राकेश शर्मा 'राजदीप'

स्वतंत्रता दिवस और थाईलैंड के मदर्स डे की पूर्व संध्या पर रक्तदान शिविर

बैंकॉक. शाबाश इंडिया

बैंकॉक में 9 अगस्त 2026 को लाइफ सेवर्स ग्रुप की ओर से 80वें स्वतंत्रता दिवस और थाईलैंड के मदर्स डे के उपलक्ष्य में स्वैच्छिक रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में भारत के राजदूत पुनीत अग्रवाल ने सहभागिता की। राजदूत पुनीत अग्रवाल ने इस जीवनरक्षक एवं पुनीत कार्य के लिए भारतीय प्रवासी समुदाय के प्रयासों की सराहना की। उन्होंने स्वैच्छिक रक्तदान के माध्यम से जरूरतमंदों की मदद करने की पहल को समाज के लिए महत्वपूर्ण और प्रेरणादायक बताया। शिविर का आयोजन भारतीय प्रवासी समुदाय की सक्रिय भागीदारी के साथ किया गया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में लोगों ने स्वैच्छिक रूप से रक्तदान कर मानव सेवा के इस अभियान में योगदान दिया।

पोंडरा जैन समाज के प्रतिनिधियों का भव्य अभिनंदन

कोलकाता. शाबाश इंडिया। श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ संरक्षिणी महासभा (पश्चिम बंगाल) के तत्वावधान में रविवार को अपराह्न 2:30 बजे क्लब हाउस, विवेक विहार, साउथ हावड़ा (कोलकाता) में पोंडरा जैन समाज के चार प्रतिनिधियों का परम पूज्य 108 श्री वसुनंदी जी महाराज ससंघ के सान्निध्य में भव्य अभिनंदन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलन एवं चित्र अनावरण के साथ हुआ। इस अवसर पर तीर्थ संरक्षिणी महासभा के राष्ट्रीय महामंत्री राजकुमार जैन सेठी, विजय सरावगी, विकास कासलीवाल, शशि जैन एवं पवन पाटोदी सहित अन्य पदाधिकारी उपस्थित रहे। राष्ट्रीय महामंत्री राजकुमार जैन सेठी ने पोंडरा जैन समाज का परिचय देते हुए बताया कि अंतिम श्रुतकेवली आचार्य भद्रबाहु के वंशज माने जाने वाले पोंडरा जैन समाज के सदस्यों ने मद्य, मांस एवं मदिरा का त्याग कर अहिंसा व्रत, णमोकार मंत्र पाठ, शांतिधारा एवं अभिषेक का नियम लेते हुए जैन धर्म को अपनाया है। भगवान महावीर के सिद्धांतों पर चलते हुए 18-19 जुलाई 2026 को गंगासागर में वेदी प्रतिष्ठा के दौरान अभिषेक एवं शांतिधारा करने वाले पोंडरा जैन समाज के चार प्रतिनिधियों में डॉ. निर्मल कुमार मंडल, शरतचन्द्र मंडल, श्रीधरचन्द्र दास एवं शंभू मंडल शामिल हैं। राजकुमार जैन सेठी ने पूज्य आचार्य श्री वसुनंदी जी महाराज को नमन करते हुए कहा कि पूज्य महाराजश्री के आशीर्वाद से गंगासागर में मात्र 7 दिनों के भीतर ''जिन चैत्यालय'' की स्थापना होना एक अलौकिक कार्य है। महाराजश्री ने 11 जुलाई को प्रेरणा दी थी कि पहले जिन मंदिर का निर्माण हो, तत्पश्चात आगे बढ़ें। उन्हीं के आशीर्वचनों के परिणामस्वरूप 18-19 जुलाई को वेदी प्रतिष्ठा संपन्न हुई तथा भगवान पार्श्वनाथ, भगवान मल्लिनाथ एवं भगवान आदिनाथ की प्रतिमाएं विराजमान की गईं। पूज्य आर्यिका माता एवं आचार्य श्री वसुनंदी जी महाराज के आशीर्वचन के पश्चात महासभा के प्रतिनिधियों द्वारा पोंडरा जैन समाज के चारों प्रतिनिधियों को माला, दुपट्टा, बैच एवं मुकुट पहनाकर तथा पूज्य उपाध्यायश्री द्वारा अभिनंदन पत्र प्रदान कर सम्मानित एवं स्वागत किया गया।

राजकुमार जैन सेठी, महामंत्री, तीर्थ संरक्षिणी महासभा
विजय कुमार सरावगी, प्रचार मंत्री, तीर्थ संरक्षिणी महासभा, पश्चिम बंगाल

मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने भोपाल में आचार्य समयसागर जी महाराज के किए दर्शन

''ॐ नमः शिवाय'' भजन सुनाकर व्यक्त की आस्था

भोपाल. शाबाश इंडिया

मध्य प्रदेश सरकार में नगरीय प्रशासन मंत्री एवं वरिष्ठ भाजपा नेता कैलाश विजयवर्गीय ने भोपाल में चातुर्मासरत श्रमण संस्कृति के महाश्रमण परम पूज्य नवाचार्य श्री 108 समयसागर जी महाराज के संघ सहित दर्शन किए। धर्म समाज प्रचारक राजेश जैन दद्दू ने बताया कि दर्शन के दौरान मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने आचार्य श्री के श्रीचरणों में शीश झुकाकर आशीर्वाद प्राप्त किया। इस अवसर पर उन्होंने भक्तिभाव से ''ॐ नमः शिवाय'' भजन सुनाकर गुरुदेव के प्रति अपनी श्रद्धा एवं भक्ति प्रकट की तथा प्रदेश की खुशहाली एवं समृद्धि की कामना की। आचार्य श्री ने भी मंत्री कैलाश विजयवर्गीय को जनसेवा के कार्यों में सफलता का आशीर्वाद प्रदान किया। दर्शन के दौरान चातुर्मास कमेटी की ओर से मंत्री का स्वागत एवं अभिनंदन किया गया।

नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु।

खाटूश्यामजी मंदिर में 19 घंटे दर्शन नहीं कर पाएंगे श्रद्धालु

सीकर. कासं। सीकर जिले के खाटूश्यामजी बाबा का तिलक और विशेष सेवा-पूजा 14 अगस्त को होगी। ऐसे में मंदिर में 19 घंटे के लिए दर्शन बंद रहेंगे। मंदिर कमेटी ने इस संबंध में सूचना जारी की है। मंदिर कमेटी के कोषाध्यक्ष रवि सिंह चौहान ने बताया कि इस बार 14 अगस्त को बाबा की विशेष सेवा-पूजा और तिलक किया जाएगा। ऐसे में 13 अगस्त की रात 10 बजे से मंदिर में दर्शन बंद होंगे। जो 14 अगस्त की शाम करीब 5 बजे शुरू होंगे। गौरतलब है कि खाटूश्यामजी में एकादशी के अलावा वीकेंड पर भी लाखों की संख्या में श्रद्धालु दर्शन करने के लिए आते हैं। इस बार 14 अगस्त को शनिवार होने और 15 अगस्त को रविवार होने के चलते बड़ी संख्या में श्रद्धालु पहुंच सकते हैं।

राजनीति

घेवर की मिठास पर मिलावट का साया

डॉ. सत्यवान सौरभ

मानसून के आगमन के साथ उत्तर भारत में सावन और तीज के त्योहारों का उल्लास बढ़ जाता है। हरियाणा, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, दिल्ली और उत्तर भारत के अन्य हिस्सों में घेवर केवल मिठाई नहीं, बल्कि पारिवारिक परंपरा, स्नेह और त्योहारों की खुशियों का प्रतीक है। तीज के अवसर पर इसे बेटियों, रिश्तेदारों और मित्रों को प्रेम तथा शुभकामनाओं के रूप में भेंट किया जाता है लेकिन इस मिठास के साथ एक गंभीर चिंता भी जुड़ी है खाद्य पदार्थों में मिलावट, अस्वच्छता और मिठाइयों की ताजगी तथा सुरक्षित उपयोग अवधि के बारे में जानकारी का अभाव। त्योहारों में बढ़ती मांग व्यापारियों के लिए अवसर है, वहीं कुछ विक्रेताओं द्वारा गुणवत्ता से समझौते की आशंका भी बढ़ जाती है। सबसे बड़ी समस्या खुले में बिकने वाले घेवर की ताजगी और सुरक्षित रखरखाव को लेकर है। कई बार ग्राहक विक्रेता के इस दावे पर भरोसा कर लेते हैं कि मिठाई उसी दिन बनी है, जबकि उसकी पुष्टि का कोई स्वतंत्र माध्यम उनके पास नहीं होता। खुले में रखी मिठाई धूल, नमी, गर्मी और अस्वच्छ वातावरण से प्रभावित हो सकती है। मानसून में नमी अधिक होने के कारण खाद्य पदार्थों के सही भंडारण और स्वच्छ तरीके से संभालने की आवश्यकता बढ़ जाती है। साधारण घेवर तथा क्रीम, खोया या अन्य जल्दी खराब होने वाली सामग्री से बने घेवर की भंडारण आवश्यकताएं अलग हो सकती हैं। इसलिए विक्रेताओं को उचित तापमान, स्वच्छता और सुरक्षित रखरखाव के नियमों का पालन करना चाहिए। केवल आकर्षक दिखावट को गुणवत्ता का प्रमाण नहीं माना जा सकता। घेवर में इस्तेमाल होने वाले घी, तेल, दूध, खोया और रंगों की गुणवत्ता सीधे खाद्य सुरक्षा को प्रभावित करती है। हालांकि, केवल खुले में बिकने या दिखावट के आधार पर किसी मिठाई को मिलावटी घोषित करना उचित नहीं है। गुणवत्ता का निर्धारण निरीक्षण, नमूनाकरण और प्रयोगशाला परीक्षण के आधार पर होना चाहिए। छोटी दुकानें, अस्थायी स्टाल और स्थानीय विक्रेता भी खाद्य आपूर्ति श्रृंखला का हिस्सा हैं।

संपादकीय

न्याय की पुकार या व्यवस्था की परीक्षा?

रांची की सड़कें इन दिनों युवाओं की आकांक्षाओं और आक्रोश की गवाह बन रही हैं। जुलाई के अंतिम सप्ताह से शुरू हुआ छात्र आंदोलन अगस्त के मध्य तक जारी है। जेपीएससी और जेएसएससी की भर्ती परीक्षाओं में कथित अनियमितताओं, पेपर लीक और परिणामों में गड़बड़ी के आरोपों ने हजारों अभ्यर्थियों को जयपाल सिंह मुंडा स्टेडियम से विधानसभा परिसर तक पहुंचा दिया है। यह स्थानीय विरोध नहीं, बल्कि सरकारी भर्ती

व्यवस्था की विश्वसनीयता पर उठते सवाल हैं। छात्रों की मांगें स्पष्ट हैं। वे 14वीं जेपीएससी प्रारंभिक परीक्षा और जेएसएससी सीजीएल परीक्षा रद्द करने, पूरी प्रक्रिया की सीबीआई जांच, दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई और परीक्षा प्रणाली में सुधार की मांग कर रहे हैं। कई दिनों की भूख हड़ताल ने आंदोलन को भावनात्मक गहराई दी है। सरकार का दावा है कि 98 प्रतिशत मांगें मान ली गई हैं। कुछ परीक्षाएं रद्द हुईं, सीआईडी जांच शुरू हुई, जेपीएससी सदस्यों के इस्तीफे हुए और सुधार समिति बनी। इसके बावजूद सीबीआई जांच की मांग पर गतिरोध कायम है। छात्रों का तर्क है कि राज्य एजेंसियों पर भरोसा नहीं रह गया है, इसलिए स्वतंत्र केंद्रीय जांच जरूरी है। 10 अगस्त को विधानसभा मार्च में कंटीले तार, बैरिकेड, लाठीचार्ज, आंसू गैस और वाटर कैनन का इस्तेमाल हुआ। सैकड़ों युवा घायल हुए और कुछ अस्पताल पहुंचे। यह लोकतंत्र की ताकत और सीमाओं, दोनों को उजागर करता है। शांतिपूर्ण प्रदर्शन का अधिकार संविधान प्रदत्त है, लेकिन हिंसा और अराजकता किसी भी पक्ष के लिए स्वीकार्य नहीं होनी चाहिए। सरकार का दायित्व है कि वह युवाओं की आवाज दबाने के बजाय संवाद से शिकायतें सुने। आंदोलनकारियों को भी संघर्ष को हिंसा और राजनीतिक स्वार्थों से दूर रखना होगा। यह चिंता केवल झारखंड तक सीमित नहीं है। देश के विभिन्न हिस्सों से पेपर लीक और भर्ती परीक्षाओं में अनियमितताओं की खबरें आती रही हैं। युवा बेरोजगारी की गंभीर चुनौती के बीच सरकारी नौकरी लाखों परिवारों के लिए आर्थिक सुरक्षा और सामाजिक सम्मान का माध्यम है। धांधली का आरोप अभ्यर्थियों के भविष्य और शासन तंत्र की विश्वसनीयता पर सवाल खड़ा करता है। झारखंड में पारदर्शिता और निष्पक्षता का महत्व और बढ़ जाता है। सरकार को आंशिक सहमति पर रुकने के बजाय पूर्ण विश्वास बहाली का रास्ता अपनाना चाहिए। सीबीआई जांच कानूनी और व्यावहारिक रूप से संभव हो तो उस पर गंभीरता से विचार किया जाना चाहिए। वैकल्पिक रूप से सेवानिवृत्त उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों की स्वतंत्र समिति गठित की जा सकती है, जिसकी जांच समयबद्ध और रिपोर्ट सार्वजनिक हो। परीक्षा एजेंसियों में सुधार, डिजिटल निगरानी, प्रश्नपत्र सुरक्षा और परिणामों में पारदर्शिता सुनिश्चित करना जरूरी है। दोषी अधिकारियों और बिचौलियों पर कठोर कार्रवाई ही युवाओं का विश्वास लौटा सकती है। विपक्ष भी छात्रों के मुद्दे को राजनीतिक हथियार न बनाए।

-राकेश जैन गोदिका

परिदृश्य

युवा ऊर्जा: राष्ट्र निर्माण की बड़ी ताकत

सुनील कुमार महला

अंतर्राष्ट्रीय युवा दिवस हर वर्ष 12 अगस्त को युवाओं की भूमिका, अधिकारों, शिक्षा, रोजगार और सामाजिक विकास के प्रति जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से मनाया जाता है। संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 17 दिसंबर 1999 को अंतर्राष्ट्रीय युवा दिवस मनाने की घोषणा की थी और पहली बार यह दिवस वर्ष 2000 में मनाया गया। यह दिवस युवाओं से जुड़े अवसरों और चुनौतियों पर संवाद तथा चिंतन का महत्वपूर्ण मंच प्रदान करता है। यह कहना गलत नहीं होगा कि युवा किसी भी राष्ट्र की ऊर्जा, रचनात्मकता, नवाचार और परिवर्तन की सबसे बड़ी शक्ति होते हैं। वैश्विक स्तर पर 15 से 24 वर्ष आयु वर्ग के युवाओं की संख्या करीब 120 करोड़ है, जो विश्व की कुल आबादी का लगभग 16 प्रतिशत है। भारत दुनिया के सबसे युवा देशों में अग्रणी है। देश में 10 से 24 वर्ष आयु वर्ग के 38.2 करोड़ से अधिक युवा हैं, जबकि 15 से 29 वर्ष आयु वर्ग की आबादी लगभग 37 करोड़ है, जो देश की कुल आबादी का करीब 27 प्रतिशत है। इतनी बड़ी युवा आबादी भारत के लिए महत्वपूर्ण जनसांख्यिकीय लाभांश और विकास की बड़ी संभावना है। स्वामी विवेकानंद युवाओं को राष्ट्र की सबसे बड़ी शक्ति और परिवर्तन का प्रमुख माध्यम मानते थे। उनका विश्वास था कि युवाओं में अपार ऊर्जा, साहस, आत्मविश्वास और सृजनात्मक क्षमता होती है, जिसे सही दिशा देकर समाज का कायाकल्प किया जा सकता है। उनका प्रसिद्ध संदेश, ''उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए'', आज भी युवाओं के लिए प्रेरणास्रोत है। विवेकानंद के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्राप्त करना नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण, मन की शक्ति बढ़ाना और आत्मनिर्भर व्यक्तित्व का निर्माण करना है। वे युवाओं में शारीरिक और मानसिक दृढ़ता, अनुशासन, एकाग्रता तथा राष्ट्रसेवा की भावना को आवश्यक मानते थे। उनका युवा-दर्शन आज भी भारत की युवा शक्ति को जागृत करने के लिए अत्यंत प्रासंगिक है।

युवा शक्ति और आज का युग

आज युवा शिक्षा, विज्ञान, तकनीक, उद्यमिता, खेल, कला, समाजसेवा और पर्यावरण संरक्षण जैसे अनेक क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। डिजिटल युग ने उनकी प्रतिभा और विचारों को वैश्विक मंच तक पहुंचाने के नए अवसर प्रदान किए हैं। हालांकि, बेरोजगारी, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की उपलब्धता, मानसिक दबाव, डिजिटल असमानता, जलवायु परिवर्तन और सामाजिक असमानता जैसी चुनौतियां भी उनके सामने हैं। भारत के लिए युवा केवल भविष्य नहीं, बल्कि वर्तमान के निर्माण में भी सक्रिय भागीदार हैं। यदि युवा शक्ति को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, आधुनिक कौशल, रोजगार, उद्यमिता, विज्ञान-तकनीक और नवाचार के पर्याप्त अवसर मिलें, तो यह भारत को आर्थिक और सामाजिक विकास की नई ऊंचाइयों तक ले जा सकती है। इसके साथ युवाओं में वैज्ञानिक सोच, संवेदनशीलता, अनुशासन, राष्ट्रप्रेम और सामाजिक उत्तरदायित्व का विकास भी जरूरी है। अंतर्राष्ट्रीय युवा दिवस हमें याद दिलाता है कि युवाओं को केवल अवसरों की तलाश करने वाला वर्ग नहीं, बल्कि नए अवसरों का निर्माण करने वाली शक्ति बनना होगा। युवा जितने जागरूक, कुशल, संवेदनशील और जिम्मेदार होंगे, समाज उतना ही मजबूत होगा। युवा शक्ति को सही दिशा देना केवल सरकार या परिवार की नहीं, बल्कि पूरे समाज की सामूहिक जिम्मेदारी है।

दर्जनों श्रद्धालुओं ने उठाया मुनि-आर्यिका दर्शन यात्रा का लाभ

तीर्थ, मंदिरों और संतों की सुरक्षा के संकल्प के साथ 11 जिनालयों एवं 30 से अधिक मुनि-आर्यिका संघों के किए दर्शन

जयपुर. शाबाश इंडिया

अखिल भारतीय दिगंबर जैन युवा एकता संघ, मानसरोवर संभाग द्वारा रविवार को वरुण पथ दिगंबर जैन मंदिर से ''मुनि-आर्यिका दर्शन यात्रा'' का भव्य आयोजन किया गया। यात्रा का शुभारंभ वरुण पथ जैन मंदिर के दर्शन एवं गणिनी आर्यिका विभाश्री माताजी ससंघ का मंगल आशीर्वाद प्राप्त कर किया गया। यात्रा को समाजसेवी राजेंद्र जैन बूंदी वाले, सुभाष पहाड़िया, कमलचंद मनीष छाबड़ा, शैलेंद्र रवि जैन, सुनील गंगवाल, राकेश लुहाड़िया, महावीर बाकलीवाल, सुरेशचंद जैन बांदीकुई वाले, राकेश आशा जैन, महावीर छाबड़ा, हर्षवर्धन जैन, मुकेश जैन खेड़ली वाले, वरुण पथ समाज समिति अध्यक्ष जे.के. जैन, इंजीनियर्स कॉलोनी अध्यक्ष अनिल बोहरा सहित संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष अभिषेक जैन बिट्टू, राष्ट्रीय सचिव प्रमोद बाकलीवाल, मानसरोवर संभाग अध्यक्ष कुलदीप छाबड़ा एवं महामंत्री अनंत जैन सहित अन्य पदाधिकारियों ने पंचरंगा ध्वजा दिखाकर रवाना किया। मुख्य

संयोजक अमित अजमेरा एवं शशांक जैन ने बताया कि यात्रा का मूल उद्देश्य तीर्थों, जिनालयों एवं मुनि-आर्यिका संघों की सुरक्षा के प्रति समाज में जागरूकता और संकल्प को मजबूत करना था। तीर्थंकर भगवान के जयकारों के साथ यात्रा प्रारंभ हुई। यात्रियों ने भट्टारक जी की नसियां में उपाध्याय उर्जयंत सागर महाराज, जनकपुरी में आचार्य आदित्य सागर महाराज, मंगल विहार में आर्यिका अर्हमश्री माताजी तथा विवेक विहार में आर्यिका सुविज्ञमती माताजी के दर्शन एवं मंगल आशीर्वाद का लाभ प्राप्त किया। इसके बाद मुहाना स्थित पारस विहार जैन मंदिर में मुनि विश्व विजय सागर महाराज के दर्शन किए गए। प्रथम सत्र की यात्रा के समापन पर सभी यात्रियों ने सामूहिक गोठ में भाग लिया। यात्रा संयोजक प्रिया बाकलीवाल एवं कोषाध्यक्ष सुदर्शन पाटनी ने बताया कि यात्रा के दूसरे सत्र की शुरूआत मीरा मार्ग, मानसरोवर में विराजमान मुनि विलोक सागर एवं मुनि विभोध सागर महाराज के दर्शन के साथ हुई। इसके पश्चात सांगानेर स्थित चित्रकूट कॉलोनी में विराजमान आचार्य विशद सागर महाराज तथा बिलवा में विराजमान आर्यिका नंगमती माताजी के दर्शन किए गए। यात्रा पदमपुरा स्थित साधु सेवा तीर्थ पहुंची, जहां आचार्य शशांक सागर महाराज के चातुर्मास मंगल कलश स्थापना समारोह में यात्रियों ने सहभागिता की। अखिल भारतीय दिगंबर जैन युवा एकता संघ सहित सभी यात्रियों ने भजन-भक्ति एवं श्रद्धा के साथ अर्घ्य समर्पित कर आचार्य श्री का मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया। यात्रा के अंतिम चरण में अतिशय क्षेत्र बाड़ा पदमपुरा दिगंबर जैन मंदिर में सायंकाल 6:30 बजे छठे तीर्थंकर भगवान पद्मप्रभु की सामूहिक महामंगल आरती के साथ यात्रा का समापन हुआ। अध्यक्ष कुलदीप छाबड़ा के अनुसार यात्रा में 6 बसों एवं 6 अन्य वाहनों के माध्यम से 200 से अधिक श्रद्धालुओं ने सहभागिता की। यात्रियों ने 30 से अधिक मुनि एवं आर्यिका संघों के दर्शन तथा 11 जिनालयों के दर्शन का पुण्यलाभ प्राप्त किया। यात्रा के दौरान श्रद्धालुओं में विशेष उत्साह और भक्ति का वातावरण रहा। यात्रा में हर्षित गोधा, बाबूलाल जैन बिंदायका, नितेश आंधिका, दिव्या जैन, सुमन सेठी, रवि जैन, राकेश छाबड़ा, जयंत छाबड़ा सहित संगठन के अनेक पदाधिकारी, कार्यकर्ता एवं श्रद्धालु उपस्थित रहे।

अभिषेक जैन बिट्टू
राष्ट्रीय अध्यक्ष, अखिल भारतीय दिगंबर जैन युवा एकता संघ, जयपुर, मो. 9829566545

सुबोध महाविद्यालय में आईबीएम पाठ्यक्रमों का आधिकारिक शुभारंभ

विद्यार्थियों को एआई एवं साइबर सुरक्षा में मिलेंगे नए अवसर

जयपुर. शाबाश इंडिया

एस.एस. जैन सुबोध पी.जी. महाविद्यालय, जयपुर में आईबीएम के विभिन्न पाठ्यक्रमों का आधिकारिक शुभारंभ किया गया। इस सहयोग के अंतर्गत सुबोध महाविद्यालय को आईबीएम के उत्कृष्टता केंद्र (सेंटर ऑफ एक्सीलेंस) के रूप में विकसित किया जाएगा। इस पहल का उद्देश्य विद्यार्थियों को आधुनिक तकनीकों, उद्योग की आवश्यकताओं एवं रोजगारपरक कौशल से जोड़ना है। कार्यक्रम का शुभारंभ महाविद्यालय की प्राचार्य प्रो. (डॉ.) रेणु जोशी के स्वागत उद्बोधन से हुआ। उन्होंने आईबीएम एवं सुबोध महाविद्यालय के बीच हुए सहयोग को विद्यार्थियों के ज्ञान, तकनीकी दक्षता एवं रोजगार क्षमता में वृद्धि की दिशा में महत्वपूर्ण पहल बताया। उन्होंने सूचना प्रौद्योगिकी एवं साइबर सुरक्षा के क्षेत्र में बढ़ते रोजगार अवसरों के साथ औद्योगिक भ्रमण, व्यावहारिक प्रशिक्षण एवं अनुभवात्मक शिक्षा के महत्व पर भी प्रकाश डाला। सुबोध शिक्षा समिति, जयपुर के सचिव सुमेर सिंह बोथरा ने कहा कि यह पहल विद्यार्थियों को उद्योग की आवश्यकताओं के अनुरूप तकनीकी एवं व्यावसायिक कौशल प्रदान करने तथा एआई, साइबर सुरक्षा एवं अन्य उभरती तकनीकों के क्षेत्र में उनके करियर को नई दिशा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। कार्यक्रम में सुबोध महाविद्यालय के संयोजक विनय चंद डागा ने उद्योगोन्मुख शिक्षा एवं उन्नत तकनीकों के माध्यम से विद्यार्थियों के विकास में आईबीएम की भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने विद्यार्थियों को तकनीकी ज्ञान, व्यावसायिक कौशल, बदलती परिस्थितियों के अनुरूप स्वयं को ढालने की क्षमता तथा निरंतर सीखने के लिए प्रेरित किया। जगदीश भट्ट ने सूचना प्रौद्योगिकी, साइबर सुरक्षा एवं एआई के क्षेत्र में तेजी से हो रहे बदलावों तथा विद्यार्थियों के लिए उभरते करियर अवसरों की जानकारी दी। उन्होंने आईबीएम एवं सुबोध महाविद्यालय के बीच हुए समझौता ज्ञापन, प्रशिक्षण अवसरों, उद्योगोन्मुख पाठ्यक्रमों तथा अर्धचालक प्रौद्योगिकी से संबंधित कार्यक्रमों के महत्व को रेखांकित किया। विद्यार्थियों को औद्योगिक अनुभव प्रदान करने के उद्देश्य से दिल्ली एवं गुरुग्राम में प्रस्तावित औद्योगिक भ्रमण की जानकारी भी दी गई। इस अवसर पर विद्यार्थियों को अपने शैक्षणिक, तकनीकी एवं व्यावसायिक कौशल को निरंतर विकसित करने तथा बदलती तकनीकी आवश्यकताओं के अनुरूप स्वयं को तैयार करने के लिए प्रेरित किया गया। कार्यक्रम में श्रीमती शिप्रा ने आईबीएम एवं सुबोध महाविद्यालय के सहयोग पर जानकारीपूर्ण प्रस्तुति दी। उन्होंने विद्यार्थियों के लिए उपलब्ध प्रशिक्षण, शिक्षा एवं करियर संबंधी अवसरों की जानकारी देते हुए उन्हें भविष्य की आवश्यकताओं के अनुरूप रोजगार-योग्य कौशल विकसित करने तथा एआई एवं अन्य आधुनिक तकनीकी अवसरों का प्रभावी उपयोग करने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम के अंत में डॉ. रचना गौड़ ने धन्यवाद ज्ञापित किया। उन्होंने आईबीएम टीम के सहयोग एवं मार्गदर्शन के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि आईबीएम एवं सुबोध महाविद्यालय का यह सहयोग विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास तथा उनके लिए नए करियर अवसरों के सृजन की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। कार्यक्रम के पश्चात राहुल बत्रा द्वारा विद्यार्थियों के लिए प्रदर्शन एवं प्रशिक्षण सत्र आयोजित किया गया। इस दौरान एआई के क्षेत्र में भविष्य की आवश्यकताओं के अनुरूप कौशल, करियर योजना, व्यावसायिक परिचय-पत्र, आईबीएम के परियोजना-आधारित प्रशिक्षण कार्यक्रम, 120 घंटे की इंटर्नशिप, 7 विभिन्न प्रशिक्षण धाराओं एवं पाठ्यक्रमों, शिक्षण प्रबंधन प्रणाली, प्रमाण-पत्र, संभावित मानदेय तथा रोजगार के अवसरों से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की गई। साथ ही विद्यार्थियों की जिज्ञासाओं एवं प्रश्नों के समाधान के लिए संवादात्मक प्रश्नोत्तर सत्र भी आयोजित किया गया। विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हुए आईबीएम के विभिन्न प्रशिक्षण एवं करियर अवसरों के बारे में जानकारी प्राप्त की।

जगदीश भट्ट ने सूचना प्रौद्योगिकी, साइबर सुरक्षा एवं एआई के क्षेत्र में तेजी से हो रहे बदलावों तथा विद्यार्थियों के लिए उभरते करियर अवसरों की जानकारी दी।

हरियाली का संदेश: फाफरिया हनुमान विकास संस्थान ने किया 31 वृक्षों का रोपण

भीनमाल (मुकेश सोलंकी). शाबाश इंडिया

पर्यावरणीय संतुलन को बढ़ावा देने और क्षेत्र को हरा-भरा बनाने के संकल्प के साथ स्थानीय फाफरिया हनुमान विकास संस्थान द्वारा विशेष पौधारोपण अभियान आयोजित किया गया। इस दौरान संस्थान के पदाधिकारियों एवं स्थानीय गणमान्य नागरिकों की मौजूदगी में परिसर और आसपास के क्षेत्रों में कुल 31 पौधे रोपे गए। अभियान के दौरान नीम, पीपल, बरगद एवं अन्य छायादार पौधों का रोपण किया गया। संस्था के सदस्यों ने केवल पौधे लगाने का ही संकल्प नहीं लिया, बल्कि उनकी नियमित देखभाल, सिंचाई एवं सुरक्षा की जिम्मेदारी भी संभाली। वृक्षारोपण कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्थान के अध्यक्ष तेजराज मेहता ने की। इस अवसर पर कोषाध्यक्ष भंवरलाल सोलंकी, जेरूपाराम माली, रमेश अग्रवाल, किशोर सांखला, क्षवण जीनगर, सोमाराम सोनी, वालराम मौर्य, हीरालाल बालौत, भाणाराम मेघवाल, भरत कुमार माहेश्वरी, नरपत सिंह राव, रूपनाथ सहित क्षेत्र के कई प्रमुख समाजसेवी एवं प्रबुद्ध नागरिक उपस्थित रहे। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए वक्ताओं ने कहा कि पेड़-पौधे ही हमारी आने वाली पीढ़ियों के लिए शुद्ध हवा और स्वच्छ पर्यावरण का आधार हैं। प्रत्येक नागरिक को अपने जीवन में कम से कम एक पौधा अवश्य लगाना चाहिए और उसकी नियमित देखभाल भी करनी चाहिए। स्थानीय निवासियों ने फाफरिया हनुमान विकास संस्थान के इस सराहनीय कार्य की प्रशंसा करते हुए इसे पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एक प्रेरणादायक कदम बताया।

लहरिया की थीम पर संपन्न हुआ 'राजस्थान री तीज' का समापन

जयपुर. शाबाश इंडिया

फ्रेंड्स क्लब एवं पावर बाय होटल इनारा की ओर से राजस्थान के पारंपरिक त्योहार सावन की तीज के अवसर पर आयोजित 'राजस्थान री तीज' का समापन शनिवार, 8 अगस्त 2026 को होटल इनारा, मुहाना मंडी रोड पर हुआ। लहरिया थीम पर आयोजित इस कार्यक्रम में जयपुर शहर के विभिन्न हिस्सों से महिलाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम आयोजक विनीत जैन छाबड़ा ने बताया कि कार्यक्रम में जयपुर शहर के विभिन्न क्षेत्रों से महिलाओं ने भाग लिया। मुख्य अतिथि के रूप में श्रीमती माओ शेखर, नितेश-सुषमा, श्रीमती प्रियंका बंसल, श्रीमती सुरभि मिश्रा तथा श्री अभिनव-आरुषि जैन शामिल हुए। वहीं, टेलीविजन जगत के बालाजी टेलीफिल्म्स के मुख्य कलाकार एवं 'भाग्य कुंडली' के लीड हीरो नीरज शर्मा ने सेलिब्रिटी गेस्ट के रूप में शिरकत कर सभी मेहमानों को चौंका दिया। महिलाओं ने रैंप वॉक के माध्यम से अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। कार्यक्रम आयोजक अक्षिता जैन ने बताया कि सिंगर अंबिका के लाइव बैंड, सेलिब्रिटी एंकर मीन एवं पल्लवी मारु के लोक नृत्य-नाट्य संस्थान ने कार्यक्रम के अंत तक महिलाओं का जोश बनाए रखा। कार्यक्रम में मजेदार गेम्स, डीजे डांस, मस्ती, रैंप शो एवं ढेरों उपहार आकर्षण का केंद्र रहे। अन्य कार्यक्रम आयोजक अंकुर जैन ने बताया कि कार्यक्रम में शामिल सभी महिलाओं को स्वास्तिक क्रिएशन की ओर से एसी दुपट्टा, पद्मावती कलेक्शन की ओर से डिजाइनर गिफ्ट तथा आईना की ओर से सभी आगंतुक महिलाओं को सौंदर्य प्रसाधन सेवाओं के गिफ्ट प्रदान किए गए। इसके अलावा प्रतिभागी महिलाओं को विभिन्न टाइटल प्रदान किए गए। विजेताओं को शेल्डन लंदन की ओर से पर्स, सपना क्रिएशन की ओर से बैंगल्स, बब्बर हैंडीक्राफ्ट की ओर से गिफ्ट तथा बसंत जैन की ओर से मोमेंटो एवं ट्रॉफी प्रदान की गई। वहीं, सबसे बड़े टाइटल 'राजस्थान री तीज' की विजेता निकिता खंडेलवाल को ग्रे राउज की ओर से शानदार गिफ्ट हैम्पर दिया गया। कार्यक्रम की कोर टीम के सदस्यों पल्लवी मारु, डॉ. प्रतिभा जैन, अंजलि जैन, शालू बाकलीवाल, रीना जैन, डिंपल जैन, पिंकी पाटनी, चारुल जैन एवं मनीषा जैन ने पूरे कार्यक्रम की बागडोर संभाली। कार्यक्रम के सूत्रधार अर्पित जैन एवं विजेता जैन ने बताया कि कार्यक्रम में अतिथि के रूप में भाजपा जिलाध्यक्ष अमित गोयल, बॉलीवुड जनसंपर्क अधिकारी मुकेश शर्मा, नगर निगम जनसंपर्क अधिकारी श्रीमती धर्मिता चौधरी, साइबर क्राइम की सीआई रसीली मीना, मिस राजस्थान 2026 की विजेता उमा मीना एवं रनरअप सावी शर्मा तथा रमणी ग्रुप की राशिका राठौर ने शिरकत की। उन्होंने बताया कि कार्यक्रम में आने वाले सभी अतिथियों एवं प्रतिभागियों के लिए आयोजन स्थल पर ही हाई टी, स्नैक्स एवं डिनर की व्यवस्था की गई। विनीत जैन, अक्षिता जैन एवं डॉ. अंकुर अग्रवाल ने बताया कि कार्यक्रम का मंच संचालन सेलिब्रिटी एंकर मीन ने किया। वहीं, बॉलीवुड सिंगर अनामिका मिश्रा एवं उनकी पूरी टीम ने लाइव बैंड के साथ पूरे माहौल को राजस्थानी रंग में रंग दिया और महिलाओं को जमकर झूमने पर मजबूर कर दिया। आयोजकों ने अगले सीजन को और भी शानदार बनाने का वादा करते हुए कार्यक्रम का समापन किया।

अ.भा. धर्म जागृति संस्थान महिला प्रकोष्ठ ने हर्षोल्लास से मनाई हरियाली तीज

शाखाओं की अध्यक्ष एवं मंत्रियों का सम्मान किया गया। महिलाओं ने पारंपरिक एवं सांस्कृतिक परिधानों में सहभागिता करते हुए जैन धर्म की विशेषताओं को भी प्रस्तुत किया।

मुरैना/दिल्ली (मनोज जैन नायक)

आचार्यश्री वसुनंदीजी महाराज की प्रेरणा एवं आशीर्वाद से गठित अखिल भारतवर्षीय धर्म जागृति संस्थान महिला प्रकोष्ठ द्वारा हरियाली तीज महोत्सव हर्षोल्लास एवं उत्साह के साथ मोना ग्रैंड होटल, मधुबन, दिल्ली में मनाया गया। कार्यक्रम में दिल्ली-एनसीआर की विभिन्न शाखाओं की करीब 100 महिलाओं ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की। संस्थान की अध्यक्षा श्रीमती रैना जैन एवं कोषाध्यक्ष श्रीमती पदमा जैन ने बताया कि महिला प्रकोष्ठ के तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम में शकरपुर, उत्तम नगर, नोएडा एवं लोधी रोड शाखाओं की महिलाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम का शुभारंभ आचार्यश्री वसुनंदीजी महाराज के चित्र का अनावरण एवं दीप प्रज्ज्वलन कर किया गया। चित्र अनावरण श्रीमती रैना जैन (ग्रीन पार्क) एवं श्रीमती पदमा जैन (मधुबन) ने किया। दीप प्रज्ज्वलन श्रीमती नमिता जैन, श्रीमती नीना जैन (शकरपुर), श्रीमती शशि जैन एवं श्रीमती दीपा जैन (लोधी रोड), श्रीमती पूजा जैन एवं श्रीमती पिंकी जैन (उत्तम नगर) तथा श्रीमती बबिता जैन एवं श्रीमती रिंकी जैन (नोएडा) ने किया। हरियाली तीज के अवसर पर विभिन्न शाखाओं की महिलाओं के लिए सांस्कृतिक एवं मनोरंजक कार्यक्रम आयोजित किए गए। सभी प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान किए गए तथा विभिन्न

पूजा जैन बनीं हरियाली तीज क्वीन

हरियाली तीज क्वीन का चयन सांस्कृतिक परिधान एवं प्रस्तुति के आधार पर किया गया, जिसमें उत्तम नगर शाखा की श्रीमती पूजा जैन को हरियाली तीज क्वीन चुना गया। कार्यक्रम में विभिन्न प्रकार के खेल, हाउजी एवं अन्य मनोरंजक गतिविधियां भी आयोजित की गईं, जिनका महिलाओं ने जमकर आनंद लिया। कार्यक्रम में प्रचार-प्रसार में सहयोग के लिए अहिंसा प्रभावना के कार्यकारी संपादक श्री अंकित जैन को सम्मानित किया गया। दिल्ली-एनसीआर की सभी शाखाओं की महिलाओं ने कार्यक्रम में बढ़-चढ़कर भाग लिया और आयोजन को सफल बनाने में महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान किया। उत्साह, उमंग एवं सामाजिक एकता का संदेश देते हुए कार्यक्रम का समापन हुआ।

आचार्यश्री उदारसागरजी महाराज ससंघ के वर्षायोग का हुआ मंगल कलश स्थापना समारोह

धर्माराधना के संकल्प के साथ शुरू हुआ चातुर्मास

मुरैना (मनोज जैन नायक)

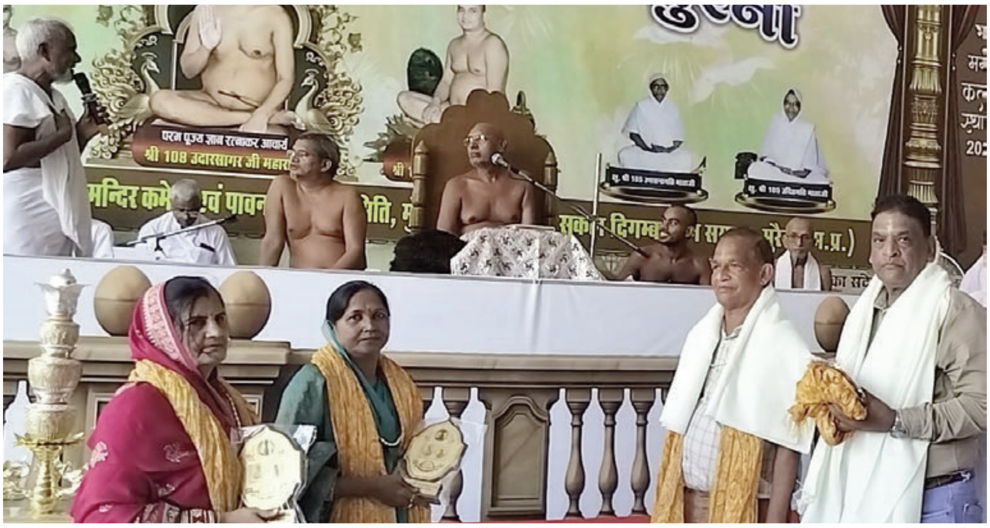

संत शिरोमणि आचार्यश्री विद्यासागर महाराज एवं आचार्यश्री अभिनंदन सागरजी महाराज के परम प्रभावक आज्ञानुवर्ती शिष्य आचार्यश्री उदारसागरजी महाराज ससंघ के पावन वर्षायोग का मंगल कलश स्थापना समारोह रविवार को मुरैना में श्रद्धा, भक्ति एवं धार्मिक उल्लास के साथ संपन्न हुआ। इस अवसर पर बड़ी संख्या में जैन समाज के श्रद्धालुओं ने उपस्थित होकर आचार्यश्री ससंघ के दर्शन, वंदन एवं मंगल आशीर्वाद का लाभ लिया। जैन सिद्धांत के अनुसार वर्षायोग साधु-संतों के संयम, साधना एवं आत्मकल्याण की आराधना का विशेष काल है। वर्षा ऋतु में सूक्ष्म एवं त्रस जीवों की उत्पत्ति अधिक होने के कारण दिगंबर जैन साधु-संत एक स्थान पर स्थिर रहकर अहिंसा, संयम, स्वाध्याय, ध्यान, तप एवं जिनवाणी की आराधना करते हैं। इसी भावना के साथ आचार्यश्री उदारसागरजी महाराज ससंघ का वर्षायोग मुरैना में प्रारंभ हुआ। मंगल कलश स्थापना के अवसर पर आचार्यश्री उदारसागरजी महाराज, मुनिश्री उपशांत सागरजी, ऐलकश्री उत्साह सागर, क्षुल्लकश्री उपकारसागर, क्षुल्लिकाश्री उदितमति एवं उपासनामति माताजी के पावन सान्निध्य में विधि-विधान एवं धार्मिक परंपराओं के अनुरूप कलश स्थापित किए गए। श्रद्धालुओं ने वर्षायोग के दौरान नियमित रूप से देवदर्शन, पूजन, स्वाध्याय, सामायिक, प्रतिक्रमण, तप एवं धर्मचर्चा करने का संकल्प लिया। कलश स्थापना को लेकर समाजजनों में विशेष उत्साह दिखाई दिया। इस अवसर पर धर्मसभा को संबोधित करते हुए आचार्यश्री ने कहा कि चातुर्मास केवल साधु-संतों के एक स्थान पर रहने का समय नहीं, बल्कि श्रावक-श्राविकाओं के लिए भी आत्मचिंतन एवं धमाराधना का अवसर है। मनुष्य को इस पावन काल का सदुपयोग करते हुए अपने जीवन में अहिंसा, संयम, त्याग एवं सदाचार को अपनाना चाहिए। बाहरी परिस्थितियों को बदलने के साथ-साथ अपने भीतर के राग-द्वेष एवं कषायों को कम करना ही वास्तविक धर्मसाधना है। कलश स्थापना समारोह में मुनिश्री उपशांत सागर महाराज ने कहा कि चातुर्मास केवल चार माह का पड़ाव नहीं, बल्कि आत्मकल्याण की साधना का पवित्र अवसर है। जिस प्रकार कलश में जल भरकर उसे मंगल का प्रतीक माना जाता है, उसी प्रकार हमें अपने जीवन को भी धर्म, संयम, त्याग एवं सद्भावना से भरना चाहिए। उन्होंने कहा कि संतों का चातुर्मास जिस स्थान पर होता है, वहां धर्म की प्रभावना बढ़ती है और समाज को आत्मचिंतन का अवसर मिलता है। इन चार महीनों में प्रत्येक श्रावक को नियमित रूप से मंदिर दर्शन, स्वाध्याय, सामायिक, पूजा-पाठ एवं साधु-संतों की वाणी का श्रवण करते हुए अपने जीवन में परिवर्तन का संकल्प लेना चाहिए। मुनिश्री ने कहा कि कलश की स्थापना तभी सार्थक होगी, जब हमारे भीतर भी धर्म का कलश स्थापित हो और हम अपने आचरण से अहिंसा, संयम एवं सदाचार को जीवन में उतारें। चातुर्मास का उद्देश्य बाहरी उत्सव नहीं, बल्कि भीतर की आत्मा को जागृत करना है। वर्षायोग कलश स्थापना समारोह में प्रथम कलश विनोदकुमार-पवन कुमार जैन, उज्जैन, द्वितीय कलश रमाशंकर-शुभम जैन नायक, गढ़ी वाले, मुरैना, तृतीय कलश पवन कुमार-सिद्धार्थ जैन, पोरसा वाले, मुरैना, चतुर्थ कलश आशीषकुमार-मिथुन जैन, गढ़ी वाले, गंज मुरैना तथा पांचवां कलश विजयकुमार जैन, मुंबई के कर-कमलों द्वारा स्थापित किया गया।

ब्रह्मचारी भैयाजी एवं विद्वतजनों ने किया संचालन

समारोह में बाल ब्रह्मचारी संजय भैयाजी विशेष रूप से उपस्थित रहे। ब्रह्मचारी प्रदीप जैन 'पियूष' ने सभी धार्मिक क्रियाएं विधि-विधानपूर्वक मंत्रोच्चारण के साथ संपन्न कराईं। मंच संचालन में संजय शास्त्री सिहोनिया, विद्वान नवनीत शास्त्री एवं चक्रेश शास्त्री ने पूर्ण सहयोग प्रदान किया। इस अवसर पर टीकमगढ़, फिरोजाबाद, सागर, दमोह, बड़ागांव, आठनेर, मुलताई, खड़गापुर, सुल्तानगंज, बांसा, अंबाह आदि स्थानों से गुरु भक्त साधर्मी बंधुओं ने सहभागिता प्रदान की।

साधर्मी बंधुओं ने किए मांगलिक कार्यक्रम

समारोह के शुभारंभ में प्रेमचंद पंकज जैन द्वारा ध्वजारोहण किया गया। बाहर से आए अतिथियों द्वारा चित्र अनावरण एवं दीप प्रज्वलन किया गया। मंगलाचरण के रूप में भूमि जैन, जैन मिलन की बालिकाओं एवं नन्हे-मुन्ने बच्चों ने भक्तिमय नृत्य प्रस्तुत किए।

किस्मत, वसीयत, भगवान और हाथ की लकीरों पर विश्वास मत करना: मुनिश्री सुधासागरजी

राजेश जैन दद्दू, शाबाश इंडिया

इंदौर। युवाओं! तुम्हारे माता-पिता के पास खूब संपदा हो, लेकिन तुम्हारी किस्मत में नहीं होगी तो वह तुम्हें नहीं मिलेगी। राजा के यहां जन्म लेने वाला बालक जरूरी नहीं कि राजा ही बने। किस्मत का खेल देखो कि अयोध्या नरेश दशरथ के पुत्र श्रीराम का अगले दिन राजतिलक होने वाला था, लेकिन रातोंरात परिस्थितियां ऐसी बदलीं कि जिस राम को सुबह अयोध्या का राजा बनना था, वे सूर्योदय से पहले वनवासी बन गए। इसलिए इंदौरी भव्य आत्माओं, कभी भी न तो अपनी किस्मत पर, न माता-पिता और दादा की संपत्ति एवं वसीयत पर और न ही भगवान तथा अपने हाथ की लकीरों पर विश्वास करना। विश्वास करना है तो अपने पुरुषार्थ, कर्म और स्वयं की मेहनत से बहाए पसीने पर करना। ये उद्गार मंगलवार को श्रमण संस्कृति के महाश्रमण मुनिपुंगव सुधासागरजी महाराज ने दलाल बाग में आयोजित धर्मसभा में व्यक्त किए। धर्म समाज प्रचारक राजेश जैन दद्दू ने बताया कि गुरुदेव ने कहा कि पुरुषार्थ और पसीने में आपके हाथ की लकीरों को बदलने की ताकत है। किस्मत और भाग्य के भरोसे नहीं रहना चाहिए, बल्कि मां जिनवाणी, आगम, धर्म, पुरुषार्थ और कर्म पर विश्वास करना चाहिए। चरित्र की चर्चा करते हुए जगत पूज्य मुनिश्री ने कहा कि घर में रहने वाले लोगों का चरित्र कैसा है, यह घर की दीवारों पर टंगे चित्रों से पता चल जाता है। चित्रों से आपके अंतरंग की दशा का भी पता चलता है कि आपका मन और चरित्र कैसा है। उन्होंने कहा कि कभी-कभी गुपचुप अपने बच्चों का मोबाइल भी देख लिया करो, ताकि तुम्हें पता चल सके कि मोबाइल में किस तरह के चित्र और सामग्री डली हुई है।

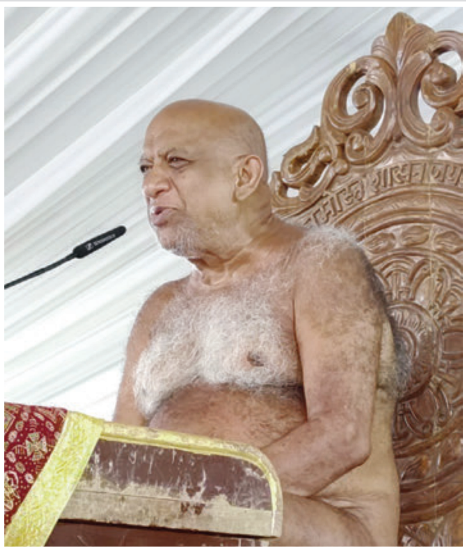

पंथ-परंपरा की नहीं होगी कोई दीवार, सबके लिए प्रवाहित होगी ज्ञान की गंगा : आचार्य पुलकसागर महाराज

आचार्यश्री के सान्निध्य में स्वाधीनता दिवस पर होगा सर्वसमाज के लिए ज्ञान गंगा महोत्सव का आगाज

भीलवाड़ा. शाबाश इंडिया

श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर ट्रस्ट, मैन सेक्टर, शास्त्रीनगर के तत्वावधान में सकल दिगंबर जैन समाज की ओर से भीलवाड़ा में पहली बार चातुर्मास कर रहे राष्ट्र संत मनोज्ञाचार्य पुलकसागरजी महाराज ससंघ के सान्निध्य में चित्रकूटधाम में 15 से 30 अगस्त तक होने वाले ज्ञान गंगा महोत्सव का प्रारंभ स्वाधीनता दिवस पर जश्ने आजादी से होगा। दोपहर 2 बजे से होने वाले इस आयोजन में आचार्य पुलकसागर महाराज भीलवाड़ावासियों को राष्ट्रभक्ति का संदेश देंगे। आचार्य पुलकसागर महाराज ने मंगलवार सुबह सूर्यमहल में धर्म संदेश प्रदान करते हुए कहा कि व्यक्ति, समाज एवं धर्म से भी बड़ा राष्ट्र है, इसलिए ज्ञान गंगा महोत्सव का प्रारंभ राष्ट्रभक्ति से होगा। सर्वसमाज एवं जन-जन के लिए होने वाली इस व्याख्यानमाला में किसी पंथ या संप्रदाय की दीवार नहीं होगी। जो भी आएगा, वह राष्ट्रधर्म एवं जीवन को बेहतर बनाने की प्रेरणा लेकर जाएगा। हमें सद्व्यवहार, संस्कार एवं मानवीय मूल्यों के माध्यम से भारत को महान बनाने का संकल्प लेना होगा। उन्होंने कहा कि इस व्याख्यानमाला के माध्यम से हमें चिंतन करना होगा कि भारत भूमि को कैसे स्वर्ग से भी महान बनाएं और इंडिया को कैसे फिर भारत का स्वरूप प्रदान करें। मंदिरों में मूर्तियों की प्राण-प्रतिष्ठा करने से अधिक जरूरी है कि घर में जो जीवित परमात्मा है, उसकी प्राण-प्रतिष्ठा कैसे हो, इस पर चिंतन किया जाए। आचार्यश्री ने कहा कि इस व्याख्यानमाला के लिए मुझे प्रतिदिन 24 में से एक घंटा चाहिए। यह दे दिया तो मैं आपके 23 घंटे सार्थक करने का वचन देता हूं। मैं वह बात करूंगा, जिससे आपको जिंदगी जीने का आनंद मिल सके। हमें दुनिया को नहीं बदलना है, बल्कि खुद को कैसे बदल सकते हैं, इस पर चर्चा करेंगे। श्री पुलकसागर चातुर्मास समिति के अध्यक्ष प्रवीण चौधरी ने बताया कि कार्यक्रम के प्रारंभ में दीप प्रज्वलन, पाद प्रक्षालन एवं शास्त्र भेंट का सौभाग्य श्रीमती मनोरमादेवी, विनोद, रेखा, सोमेश एवं वत्सल ठग परिवार ने प्राप्त किया। उन्होंने बताया कि शास्त्रीनगर स्थित सूर्यमहल में चातुर्मास की धर्मसाधना निरंतर जारी है। प्रतिदिन सुबह 8:30 से 10 बजे तक गुरु दर्शन एवं धर्म संदेश श्रवण करने के लिए बड़ी संख्या में श्रद्धालु पहुंच रहे हैं। शाम 7 से 8 बजे तक आनंद यात्रा एवं आरती का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें शहर के विभिन्न क्षेत्रों से श्रद्धालु शामिल होकर धर्मलाभ प्राप्त कर रहे हैं। चातुर्मास समिति के संयोजक मनीष शाह ने बताया कि चातुर्मास का प्रमुख आकर्षण चित्रकूटधाम में 15 से 30 अगस्त तक सर्वसमाज के लिए आयोजित होने वाला ज्ञान गंगा महोत्सव है, जिसके लिए व्यापक तैयारियां जारी हैं। प्रथम दिन जश्ने आजादी में गुरुदेव के संदेश के साथ राष्ट्रभक्ति के रंगों से ओतप्रोत सांस्कृतिक प्रस्तुतियां भी दी जाएंगी। समिति के सह संयोजक लोकेश अजमेरा ने बताया कि इस महोत्सव में भीलवाड़ा के साथ राजस्थान एवं देश के विभिन्न क्षेत्रों से प्रतिदिन हजारों श्रद्धालु आचार्यश्री के मुखारबिंद से प्रवचन सुनने उमड़ेंगे। प्रथम दिन का आयोजन दोपहर 2 बजे से होने के बाद 16 से 30 अगस्त तक प्रतिदिन सुबह 8:30 से 10 बजे तक प्रवचन होंगे। महोत्सव के तहत 19 अगस्त को मोक्ष सप्तमी एवं 28 अगस्त को रक्षाबंधन के अवसर पर विशेष आयोजन किए जाएंगे।

मिर्गी रोगियों के लिए वरदान बना मिर्गी अस्पताल: रिखब चंद सोनी

नि:शुल्क मिर्गी रोग शिविर में 144 रोगी हुए लाभान्वित

गुलाबपुरा. शाबाश इंडिया

श्री प्राज्ञ मिर्गी रोग निवारक समिति, गुलाबपुरा द्वारा माह के द्वितीय मंगलवार, 11 अगस्त 2026 को संस्था परिसर में नि:शुल्क मिर्गी रोग चिकित्सा शिविर आयोजित किया गया। शिविर में वरिष्ठ चिकित्सक डॉ. आर.के. चंडक ने अपनी सेवाएं प्रदान करते हुए कुल 144 मरीजों का उपचार एवं परामर्श किया, जिनमें 12 नए मरीज शामिल रहे। सभी मरीजों को नि:शुल्क दवाइयां भी वितरित की गईं। संस्था के मंत्री पदमचंद खटोड़ ने बताया कि संस्था द्वारा नियमित रूप से आयोजित किए जा रहे इन शिविरों का उद्देश्य मिर्गी रोग से पीड़ित जरूरतमंद मरीजों को चिकित्सा परामर्श, उपचार एवं दवाइयां उपलब्ध करवाना है। संस्था मंत्री पारस बाबेल ने संस्था की सेवा गतिविधियों की जानकारी दी। कोषाध्यक्ष राजेंद्र चौरड़िया ने अतिथियों एवं लाभार्थियों का स्वागत-अभिनंदन करते हुए आभार व्यक्त किया। शिविर में अनिल चौधरी ने मरीजों एवं उनके परिजनों को मिर्गी रोग से बचाव, योग एवं नियमित योगाभ्यास के महत्व के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने स्वस्थ जीवन के लिए योग को दिनचर्या में शामिल करने पर जोर दिया। लाभार्थी परिवार की ओर से रिखब चंद सोनी (केकड़ी) एवं रवि कुमार ने सभी मरीजों को शुभकामनाएं देते हुए उनके शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की कामना की। इस अवसर पर लाभार्थी परिवार से श्रीमती तारा देवी, रिखब चंद सोनी (केकड़ी), आनंद कुमार एवं मयंक कुमार श्रीश्रीमाल उपस्थित रहे।

280 से अधिक लोगों ने उठाया नि:शुल्क भोजन सेवा का लाभ

शिविर में आने वाले मरीजों एवं उनके परिजनों के लिए पूरे अगस्त माह आयोजित होने वाले सभी शिविरों में नि:शुल्क भोजन सेवा की व्यवस्था की गई है। यह सेवा दूले सिंह, नरेंद्र कुमार, निर्मल कुमार एवं अनिल कुमार पगारिया (जोजवा) की ओर से रखी गई। इस भोजन सेवा का 280 से अधिक व्यक्तियों ने लाभ उठाया। शिविर में श्रीमती शेफाली, श्रीमती शिमला देवी, गौरव सिंघवी, अनिल मेहता, ज्ञान पिपाड़ा सहित संस्था के मदन लाल लोढ़ा, मदन लाल रांका, पारस बाबेल, सुरेश लोढ़ा, प्रेम पाडलेचा, सुशील चौधरी, दिलीप पाराशर, राजेंद्र जायसवाल, ज्ञान बाबेल एवं भावेश सिंघवी सहित अनेक गणमान्यजनों ने अपनी सेवाएं प्रदान कीं। मरीजों एवं उनके परिजनों ने संस्था द्वारा नियमित रूप से संचालित नि:शुल्क चिकित्सा एवं सेवा गतिविधियों की सराहना करते हुए कहा कि मिर्गी रोगियों के लिए यह सेवा वास्तव में किसी वरदान से कम नहीं है।

पदमचंद खटोड़
मंत्री, श्री प्राज्ञ मिर्गी रोग निवारक समिति, गुलाबपुरा

रक्तदान शिविर में दिखा उत्साह, 273 यूनिट रक्त एकत्रित

जयपुर. शाबाश इंडिया। निश्चय संस्थान की ओर से मंगलवार को छठे रक्तदान शिविर का आयोजन श्याम नगर स्थित ग्रास फील्ड क्लब में किया गया। शिविर में रक्तदाताओं ने उत्साहपूर्वक भाग लेते हुए 273 यूनिट रक्तदान किया। संस्थान के अध्यक्ष अमन अग्रवाल ने बताया कि शिविर में मुख्य अतिथि पूर्व विधायक प्रताप सिंह खाचरियावास, डॉ. अंकित माथुर, रोटरी के चार्टर प्रेसिडेंट सुधीर जैन गोधा, राजेंद्र गुप्ता एवं गोविंद जाखोटिया मौजूद रहे। इस दौरान रक्तदाताओं ने बढ़-चढ़कर सहभागिता की और 273 यूनिट रक्त एकत्रित किया गया। उन्होंने बताया कि सभी रक्तदाताओं को ''एक पेड़ लगाओ, जीवन बचाओ'' अभियान के तहत पौधे वितरित किए गए। अध्यक्ष अग्रवाल ने बताया कि शिविर में अपोलो क्लिनिक की ओर से निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर भी लगाया गया। शिविर के सफल आयोजन में नितिन, विवेक, मोहक, अविनाश, ऋषि सिंह, राकेश, कृष्ण एवं निश्चय संस्थान की पूरी टीम ने सहयोग किया। टीम ने सभी रक्तदाताओं एवं अतिथियों का आभार व्यक्त किया।

परिषहों को सहने वाला ही सच्चा साधक, दूसरों को देखने के बजाय स्वयं को देखो : आचार्य विमर्श सागरजी

सोनल जैन की रिपोर्ट

देहरा तिजारा। श्री 1008 चंद्रप्रभु दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र, देहरा तिजारा के चंद्र तीर्थ मंडपम में परम पूज्य भावलिंगी संत आचार्यश्री 108 विमर्श सागरजी महामुनिराज का 31वां मंगल चातुर्मास धर्म प्रभावना के साथ चल रहा है। चातुर्मास के दौरान आयोजित धर्मसभा में आचार्यश्री ने साधना के मार्ग में आने वाले परिषहों को सहन करने तथा स्वयं के भीतर झांकने का संदेश दिया। मंदिर अध्यक्ष मुकेश जैन एवं प्रचार मंत्री उमंग जैन ने बताया कि आचार्यश्री ने कहा कि निर्ग्रंथ श्रमण साधकों की साधना का मूल आधार परिषहों को समभावपूर्वक सहन करना है। साधक जब परिषहों से घबराने के बजाय उन्हें सहन करता है, तब उसकी साधना में दृढ़ता आती है। रत्नत्रय की साधना केवल बाहरी रूप से करने की बात नहीं है, बल्कि जीवन में आने वाली विपरीत परिस्थितियों में भी समता बनाए रखना ही उसकी वास्तविक कसौटी है। उन्होंने कहा कि परिषह देखने और सुनने में भले ही कठिन लगते हों, लेकिन जिसने उन्हें सहन करना सीख लिया, उसने साधना को सरलता से जीना सीख लिया। परिषह साधक के लिए रुकावट नहीं, बल्कि उसकी आत्मिक शक्ति को जागृत करने का अवसर हैं। साधना के मार्ग पर कठिनाइयां आएंगी, लेकिन उनसे विचलित हुए बिना अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते रहना ही साधक की पहचान है। आचार्यश्री ने भगवान आदिनाथ की साधना का प्रसंग सुनाते हुए कहा कि भगवान आदिनाथ ने छह माह तक योग धारण किया और छह माह बाद जब आहार के लिए निकले तो उन्हें आहार की प्राप्ति नहीं हुई। आहार का अंतराय आया, लेकिन भगवान ने उस वेदना को सहज भाव से सहन किया। यह प्रसंग बताता है कि साधना में परिस्थितियां कैसी भी हों, साधक को अपने भावों में विकार नहीं आने देना चाहिए।

आंगनवाड़ी के बच्चों को स्कूल बैग एवं गणवेश की सेवा भेंट की

अजमेर. शाबाश इंडिया

श्री दिगंबर जैन महासमिति महिला एवं युवा महिला संभाग, अजमेर द्वारा समाजश्रेष्ठी राकेश पालीवाल, श्री दिगंबर जैन महासमिति अजमेर संभाग के अध्यक्ष अतुल पाटनी एवं महिला महासमिति की राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष मधु पाटनी के सहयोग से कृष्णगंज स्थित आंगनवाड़ी में शिक्षा ग्रहण करने वाले 20 नन्हे-मुन्ने बच्चों को स्कूल बैग एवं गणवेश की सेवा प्रदान की गई। युवा महिला संभाग अध्यक्ष सोनिका भैंसा ने बताया कि कार्यक्रम संयोजक अतुल पाटनी के संयोजन में स्लम क्षेत्र राजीव कॉलोनी एवं कैलाशपुरी के पहाड़ी क्षेत्र में रहने वाले जरूरतमंद परिवारों के बच्चे इस शिक्षा के मंदिर में संस्कार एवं शिक्षा ग्रहण करने के लिए आते हैं। आंगनवाड़ी कार्यकर्ता शारदा शर्मा एवं सहायिका श्रीमती हीरा के माध्यम से बच्चों को स्कूल बैग एवं गणवेश वितरित किए गए। बच्चों के अभिभावकों ने सेवा सहयोगियों के प्रति आभार व्यक्त किया। इससे पूर्व मधु पाटनी ने कहा कि सामाजिक सरोकार के अंतर्गत महासमिति द्वारा लगातार जरूरतमंदों, विशेषकर बच्चों को शिक्षा के लिए प्रेरित करने के उद्देश्य से विभिन्न सेवा कार्य किए जा रहे हैं। इसी क्रम में बच्चों को शिक्षा सामग्री उपलब्ध करवाकर उन्हें लाभान्वित किया गया।

जैन धर्म व भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार के लिए दल विदेश यात्रा करते हुए ओरलैंडो पहुंचा

जयपुर. शाबाश इंडिया

जैन धर्म एवं भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से जय जिनेंद्र ग्रुप, महावीर नगर का 10 सदस्यीय दल चार सप्ताह की विदेश यात्रा पर जयपुर से रवाना होकर ओरलैंडो पहुंचा। यात्रा के दौरान दल द्वारा जैन धर्म एवं भारतीय संस्कृति का प्रचार-प्रसार किया जाएगा तथा विभिन्न स्थानों पर जैन मंदिरों के दर्शन एवं समाजजनों से धर्मचर्चा की जाएगी। श्री दिगंबर जैन महासमिति के राष्ट्रीय महामंत्री एवं ग्रुप के सुरेंद्र जैन पांड्या ने बताया कि ओरलैंडो पहुंचने पर दल के सदस्यों ने पदमपुरा के ऐतिहासिक पंचकल्याणक में आचार्य वर्धमान सागरजी द्वारा प्रतिष्ठित भगवान महावीर एवं भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमाओं के दर्शन किए। उन्होंने बताया कि दल चार सप्ताह के दौरान अमेरिका के विभिन्न राज्यों की यात्रा करेगा। इस दौरान विभिन्न जैन मंदिरों के दर्शन करने के साथ वहां निवासरत जैन समाज के लोगों से मुलाकात कर धर्मचर्चा की जाएगी। सुरेंद्र जैन पांड्या ने बताया कि यात्रा की शुरूआत सैन फ्रांसिस्को हवाई अड्डे से हुई। वहां पहुंचने के बाद सबसे पहले जैन मंदिर के दर्शन किए गए। उन्होंने बताया कि वहां दोनों धर्मों का एक ही मंदिर है, जहां दोनों धर्मावलंबी मिलकर पूजा-अर्चना करते हैं। इस 10 सदस्यीय दल में सेवानिवृत्त न्यायाधीश नरेंद्र कुमार जैन, सुरेश काला, कैलाश जैन एवं सुरेश सोगानी सहित अन्य सदस्य शामिल हैं। दल के सदस्यों ने बताया कि यात्रा के दौरान जैन धर्म के सिद्धांतों एवं भारतीय संस्कृति को अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाने के साथ विभिन्न स्थानों पर समाजजनों से संवाद किया जाएगा।

सुरेंद्र जैन पांड्या ने बताया कि यात्रा की शुरूआत सैन फ्रांसिस्को हवाई अड्डे से हुई। वहां पहुंचने के बाद सबसे पहले जैन मंदिर के दर्शन किए गए...

"मुखिया मुख सो चाहिए": नेतृत्व वह, जो पूरे संघ को संभाले और सबको धर्म से जोड़े: युवाचार्य महेन्द्र ऋषिजी

साध्वीद्वय बड़ी तपस्या की ओर अग्रसर; 1008 आयंबिल की आराधना से 13 अगस्त को शांतिभवन में मनाई जाएगी आनंद ऋषिजी की जन्मजयंती

भीलवाड़ा. शाबाश इंडिया

''मुखिया मुख सो चाहिए, खान-पान को एक, पालै पोसै सकल अंग, तुलसी सहित विवेक'' इस भाव को केंद्र में रखते हुए श्रमणसंघीय युवाचार्य महेन्द्र ऋषिजी ने कहा कि सच्चा मुखिया वह है, जो स्वयं के लिए नहीं, पूरे संघ के लिए जीता है। वह प्रत्येक सदस्य की चिंता करता है, सबको साथ लेकर चलता है और अपने आचरण से संगठन को ऊर्जा देता है। आनंद जन्मोत्सव के अंतर्गत मंगलवार को शांतिभवन में आयोजित विशाल धर्मसभा में उन्होंने आचार्य आनंद ऋषिजी महाराज की जीवन-यात्रा के अनसुने प्रसंगों के माध्यम से उनके नेतृत्व, संयम एवं संघ-संवर्धन की दृष्टि को रेखांकित किया। युवाचार्यश्री ने कहा कि बालक नेमीचंद से आचार्य आनंद ऋषिजी बनने तक की यात्रा केवल पदों के परिवर्तन की यात्रा नहीं थी, बल्कि निरंतर बढ़ती जिम्मेदारियों के बीच साधना, ज्ञान एवं सेवा को जीवन का आधार बनाए रखने की यात्रा थी। गुरु रत्न ऋषिजी के देवलोकगमन के बाद उन्होंने अपने छोटे गुरु भाई उत्तम ऋषिजी के साथ साधना एवं जिनशासन की सेवा को आगे बढ़ाया। बाद में धार्मिक परीक्षा बोर्ड की स्थापना से लेकर सिद्धांतशालाओं एवं पाठशालाओं के विस्तार तक उन्होंने ज्ञान-संस्कार को समाज की स्थायी शक्ति बनाने का प्रयास किया। उन्होंने कहा कि आनंद ऋषिजी ने पद प्राप्त होने के साथ स्वयं को बड़ा नहीं माना। ''जिस डाल पर फल अधिक होते हैं, वही अधिक झुकती है।'' यह भाव उनके जीवन में स्पष्ट दिखाई देता था। युवाचार्य पद, आचार्य पद एवं संघ की विभिन्न जिम्मेदारियों के निर्वहन के बावजूद उनकी सहजता, विनम्रता एवं संयम में कोई अंतर नहीं आया। उनके लिए पद अधिकार का माध्यम नहीं, बल्कि उत्तरदायित्व था। युवाचार्यश्री ने कहा कि आचार्यश्री में ज्ञान जितना गंभीर था, उनका संयम उतना ही सजीव और व्यवहार में दिखाई देने वाला था। चलने, उठने-बैठने, आहार लेने, वस्तु रखने एवं दैनिक आचरण तक में वे समितियों और संयम की सूक्ष्मता का पालन करते थे। उन्होंने कहा कि आनंद ऋषिजी को केवल संयम का उपदेश देने वाला संत कहना पर्याप्त नहीं है, वे संयम को जीवन में साकार करने वाले महापुरुष थे। उन्होंने कहा कि ''मुखिया मुख सो चाहिए'' का वास्तविक अर्थ आचार्य आनंद ऋषिजी के व्यवहार में दिखाई देता था। वे संघ के प्रत्येक संत-साध्वी की साता, आवश्यकता एवं स्वास्थ्य की जानकारी रखते थे। गोचरी के समय सभी संतों की उपस्थिति का ध्यान रखना हो या किसी साधु की दवा एवं उपचार की चिंता, उनकी दृष्टि किसी एक व्यक्ति तक सीमित नहीं रहती थी। किसी को पीछे या दूर देखकर उसकी ओर ध्यान देना और आवश्यकता समझकर पास बुला लेना उनकी सूक्ष्म संवेदनशीलता का उदाहरण था। युवाचार्यश्री ने कहा कि उनका वात्सल्य केवल अपने संघ तक सीमित नहीं था। अन्य परंपरा के साधु-साध्वियों के प्रति भी उनके मन में कटुता नहीं, बल्कि धर्मभाव था। प्रतापगढ़ में अन्य संप्रदाय के साधु-साध्वियों का चातुर्मास कराने की बात आई तो उन्होंने धमाराधना को प्राथमिकता देते हुए उनके प्रति भी पूर्ण सम्मान एवं सुविधा का ध्यान रखने की प्रेरणा दी। यही व्यापक दृष्टि एक मुखिया को केवल संगठन का प्रमुख नहीं, बल्कि पूरे धर्मसमाज का संरक्षक बनाती है। उन्होंने कहा

कि आचार्यश्री का नेतृत्व स्थिर स्थानों तक सीमित नहीं था। उत्तर भारत के दूरस्थ गांवों तक उन्होंने विहार किया और उन क्षेत्रों में भी पहुंचे, जहां वर्षों से साधु-संतों का प्रवास नहीं हुआ था। उनका उद्देश्य अपनी गुरु-परंपरा का प्रभाव बढ़ाना नहीं, बल्कि लोगों को धर्म से जोड़ना था। उन्होंने कहा कि सबको सींचना, सबकी सारणा-वारणा करना और सबको धर्म से जोड़ना ही उनके नेतृत्व की पहचान थी। पाठशालाओं के संदर्भ में युवाचार्यश्री ने कहा कि आनंद ऋषिजी की दूरदृष्टि आज भी मार्गदर्शक है। उनका मानना था कि समाज का वास्तविक भविष्य वर्तमान पीढ़ी नहीं, बल्कि संस्कारित होने वाली नई पीढ़ी है। इसलिए पाठशालाओं के संचालन में समाज को केवल आर्थिक सहयोग तक सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि समय, श्रम, ज्ञान एवं प्रोत्साहन के रूप में भी सहभागी बनना चाहिए। उन्होंने जन्मजयंती के अवसर पर प्रत्येक क्षेत्र में संचालित धार्मिक पाठशालाओं के लिए यथासंभव सहयोग का संकल्प लेने का आह्वान किया। युवाचार्यश्री ने कहा कि आनंद ऋषिजी की जीवन-यात्रा हमें बताती है कि मुखिया वह नहीं, जो सबसे आगे दिखाई दे, बल्कि वह है जिसकी दृष्टि सबसे पीछे खड़े व्यक्ति तक पहुंचे। जो स्वयं संयमित रहे, सबकी चिंता करे, ज्ञान को संस्कार में बदले और पूरे संघ को धर्म की दिशा में आगे बढ़ाए, ऐसा नेतृत्व ही दीर्घकाल तक प्रभाव छोड़ता है। साध्वी चिंतनश्रीजी ने आचार्यश्री की ज्ञान-साधना, तप एवं सरल जीवन का स्मरण करते हुए उनके व्यक्तित्व को प्रेरणास्रोत बताया। शांतिभवन आनंद अनुभूति वर्षावास मंत्री नवरतनमल भलावत ने जानकारी देते हुए बताया कि तपस्या क्रम में मासखमण की ओर अग्रसर साध्वी सौम्यश्रीजी ने 20 उपवास एवं साध्वी नाव्यश्रीजी ने 9 उपवास की तपस्या के प्रत्याख्यान ग्रहण किए। बड़ी संख्या में तपस्वी भाई-बहनों ने भी तेले सहित विविध तप आराधनाओं के प्रत्याख्यान युवाचार्यश्री से ग्रहण किए। उन्होंने बताया कि आचार्य आनंद ऋषिजी महाराज की 126वीं जन्मजयंती 13 अगस्त को शांतिभवन में 1008 आयंबिल तप दिवस के रूप में मनाई जाएगी। युवाचार्य महेन्द्र ऋषिजी, यशोदिप्ती मधुकंवरजी, उपप्रवर्तिनी दिव्यज्योतिजी, महासती सुचेताजी, साध्वी प्रियदर्शनाजी सहित साध्वीवृंद का सान्निध्य रहेगा। जन्मजयंती के अवसर पर होने वाली यह सामूहिक तप आराधना आचार्यश्री की संयम-साधना को समर्पित होगी। 1008 आयंबिल तप के लाभार्थी नवरतनमल बंब परिवार है।

प्रवक्ता:
सुनील चपलोत
शांतिभवन, भोपालगंज, भीलवाड़ा

अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के सेवानिवृत्त अधिकारियों से संवाद

सामाजिक न्याय हमारी नीतियों की आत्मा

सबका साथ-सबका विकास की भावना से वंचित वर्गों का हो रहा अभूतपूर्व उत्थान

राजकीय सेवा से सेवानिवृत्त हुए अधिकारी निभाएं सामाजिक जिम्मेदारी: मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा

जयपुर. शाबाश इंडिया

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने सरकार और समाज के बीच निरंतर संवाद पर बल देते हुए इसे नीतियों के प्रभावी क्रियान्वयन में कारगर बताया। उन्होंने कहा कि सामाजिक न्याय को नीतियों की आत्मा और योजनाओं का सार मानते हुए राज्य सरकार सबका साथ-सबका विकास की भावना से कार्य कर रही है, जिससे वंचित वर्गों का अभूतपूर्व उत्थान हो रहा है। मुख्यमंत्री अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के सेवानिवृत्त अधिकारियों से संवाद कर रहे थे। उन्होंने कहा कि अधिकारियों ने विभिन्न दायित्वों का निर्वहन करते हुए सरकार की नीतियों और योजनाओं को धरातल तक पहुंचाया और जनसेवा की है। अधिकारी सरकारी सेवा से सेवानिवृत्त होते हैं लेकिन सामाजिक जिम्मेदारियों से कभी नहीं। उनका दायित्व है कि वे वर्षों के प्रशासनिक अनुभव, जमीनी परिस्थितियों के व्यावहारिक ज्ञान और अनुभव का उपयोग करते हुए युवाओं को मार्ग दिखाएं। सेवानिवृत्त अधिकारियों ने छात्रवृत्ति राशि में वृद्धि, निःशुल्क कोचिंग योजना, कौशल विकास सहित विभिन्न सामाजिक सुरक्षा योजनाओं के बेहतर क्रियान्वयन के लिए मुख्यमंत्री का आभार व्यक्त किया। उन्होंने अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति वर्ग के विरुद्ध अत्याचार के मामलों में प्रभावी जांच एवं त्वरित कार्रवाई के लिए भी सरकार की सराहना की। उन्होंने कहा कि सेवानिवृत्त अधिकारी समाज के प्रेरणा स्रोत हैं और समाज उनके अनुभव एवं कार्यों का अनुकरण करता है। ऐसे में विकसित राजस्थान के संकल्प को साकार करने में उनका सहयोग और मार्गदर्शन अत्यंत महत्वपूर्ण है। सरकार बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर के आदर्शों पर चलते हुए समाज के अंतिम व्यक्ति तक योजनाओं का लाभ पहुंचाने के लिए प्रतिबद्ध है। सरकार स्थानीय आवश्यकताओं और संभावनाओं को ध्यान में रखते हुए विकास का रोडमैप बना कर पानी, बिजली, सड़क, स्वास्थ्य सहित बुनियादी सुविधाओं के विकास पर विशेष ध्यान दे रही है। रामजल सेतु लिंक परियोजना एवं यमुना जल समझौते जैसे महत्वपूर्ण कार्य डबल इंजन सरकार की इच्छाशक्ति का परिणाम हैं। हमारी सरकार ने महज ढाई वर्ष में 12 हजार मेगावाट विद्युत उत्पादन की उपलब्धि हासिल की है। उन्होंने कहा कि वन डिस्ट्रिक्ट, वन प्रोडक्ट और पंच गौरव जैसी योजनाओं के माध्यम से स्थानीय उत्पादों को प्रोत्साहित किया जा रहा है तथा युवाओं के लिए रोजगार के अवसर सृजित किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि सरकार ''सहकार से समृद्धि'' के संकल्प के साथ आगे बढ़ रही है। स्थानीय स्तर पर भंडारण एवं प्रसंस्करण सुविधाओं के विस्तार से किसानों की आय बढ़ाने के साथ युवाओं के लिए रोजगार के अवसर भी सृजित हो रहे हैं।

बाबा साहेब अंबेडकर आदर्श ग्राम विकास योजना से प्रशस्त हो रहा गांवों का विकास

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति वर्गों के कल्याण के लिए निरंतर कार्य कर रही है। 10 हजार से अधिक जनसंख्या वाले गांवों में वंचित वर्ग की आबादी हेतु सड़क, पेयजल, वेस्ट मैनेजमेंट आदि के विकास के लिए बाबा साहेब अंबेडकर आदर्श ग्राम विकास योजना के तहत कार्य किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि अनुसूचित जाति उत्तर मैट्रिक छात्रवृत्ति योजना के तहत करीब सवा चार लाख और अनुसूचित जनजाति उत्तर मैट्रिक छात्रवृत्ति योजना के तहत 4 लाख 30 हजार विद्यार्थियों को लाभान्वित किया गया है। उन्होंने कहा कि अंबेडकर तीर्थ स्थल यात्रा योजना के तहत बाबा साहब के स्मृति स्थलों का भम्रण, डॉ. भीमराव अंबेडकर राजस्थान दलित, आदिवासी उद्यम प्रोत्साहन योजना के तहत 887 करोड़ रुपये का ऋण वितरण तथा बारां जिले में पीएम-जनमन के तहत 14 हजार 636 पात्र परिवारों के आशियाने का सपना साकार हुआ है। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार ने छात्रावासों और आवासीय विद्यालयों में विद्यार्थियों को देय मैस भत्ते की राशि को 2 हजार 500 रुपये से बढ़ाकर 3 हजार 250 रुपये प्रतिमाह और खेल अकादमियों में देय मैस भत्ते की राशि को 2 हजार 600 रुपये से बढ़ाकर 4 हजार रुपये प्रतिमाह किया गया। उन्होंने कहा कि मां-बाड़ी केंद्रों में कार्यरत कार्मिकों के मानदेय में पिछले दो साल में लगातार 10-10 प्रतिशत की वृद्धि की गई है। वहीं, 250 नए मां बाड़ी केंद्र खोलने के आदेश भी जारी किए जा चुके हैं। इस दौरान ललित के. पंवार, जे.पी. चंदेलिया, रवि प्रकाश मेहरड़ा, ओम प्रकाश बैरवा एवं अनिल गोठवाल सहित भारतीय प्रशासनिक सेवा, भारतीय पुलिस सेवा, भारतीय राजस्व सेवा तथा प्रशासनिक एवं अन्य सेवाओं के सेवानिवृत्त अधिकारी उपस्थित रहे।

हर घर तिरंगा अभियान के तहत छावनी परिषद नसीराबाद ने निकाली तिरंगा रैली

नसीराबाद (रोहित जैन). शाबाश इंडिया

हर घर तिरंगा अभियान के तहत छावनी परिषद नसीराबाद द्वारा तिरंगा रैली का आयोजन किया गया। रैली को मुख्य अधिशासी अधिकारी मोहम्मद साकिब आलम ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। तिरंगा रैली में छावनी परिषद के कर्मचारियों एवं राजकीय विद्यालय के विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। रैली के माध्यम से नागरिकों को 5 से 17 अगस्त तक अपने-अपने घरों, कार्यालयों एवं दुकानों पर तिरंगा फहराने के लिए प्रेरित किया गया। मुख्य अधिशासी अधिकारी मोहम्मद साकिब आलम ने कहा कि तिरंगा हमारी आन, बान और शान का प्रतीक है। हर घर तिरंगा अभियान का उद्देश्य प्रत्येक नागरिक को राष्ट्रध्वज के सम्मान एवं राष्ट्रप्रेम की भावना से जोड़ना है। इसी क्रम में ''एक पेड़ मां के नाम'' अभियान के तहत भी नागरिकों को अधिक से अधिक पौधारोपण करने तथा पर्यावरण संरक्षण में अपनी सहभागिता सुनिश्चित करने के लिए प्रेरित किया गया। अभियान के माध्यम से मां के सम्मान के साथ प्रकृति एवं पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी निभाने का संदेश दिया गया। छावनी परिषद नसीराबाद ने सभी नागरिकों से हर घर तिरंगा एवं एक पेड़ मां के नाम अभियान में बढ़-चढ़कर सहभागिता करने का आग्रह किया।

स्नेह परिवार संस्थान ने मनाया लहरिया उत्सव एवं गीत गुंजन कार्यक्रम

भीलवाड़ा. शाबाश इंडिया

हाउसिंग बोर्ड, शास्त्री नगर स्थित स्नेह परिवार संस्थान द्वारा स्वतंत्रता सेनानी फूलचंद बिहानी स्मृति उद्यान में लहरिया उत्सव एवं गीत गुंजन कार्यक्रम उल्लास एवं उत्साह के साथ आयोजित किया गया। कार्यक्रम में महिलाओं ने सामूहिक रूप से सावन के राजस्थानी गीतों पर भजन एवं नृत्य प्रस्तुत कर आनंद लिया। प्रसिद्ध कवयित्री शालू जैन ने विशेष अतिथि के रूप में अपनी रचनाओं की प्रस्तुति देकर श्रोताओं का मन मोह लिया। इस दौरान एकल गीत गुंजन प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें कुल 13 प्रतिभागियों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पवन अग्रवाल, द्वितीय स्वाति शर्मा एवं तृतीय स्थान प्रियंका पाटनी ने प्राप्त किया। सांत्वना पुरस्कार पुष्पा काला को प्रदान किया गया। श्रेष्ठ वेशभूषा एवं साज-सज्जा के साथ कार्यक्रम में पहुंचीं 15 महिलाओं में से निर्णायक समिति द्वारा स्वाति शर्मा को ''सावन की राधा रानी'' घोषित कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में सविता घीया, शांति मंडोवरा एवं उषा बिहानी ने विशेष प्रस्तुतियां देकर दर्शकों एवं श्रोताओं का मन मोह लिया। कार्यक्रम को सफल बनाने में पवन अग्रवाल, दिलीप बोडाणा, राजकुमार बिहानी, अजय टोंग्या, आभा टोंग्या, सुशीला छाबड़ा, स्वाति शर्मा एवं कल्पना झाझरी की महत्वपूर्ण भूमिका रही। कार्यक्रम का संचालन संस्थापक सदस्य अशोक छाबड़ा ने किया।

गुरु के प्रति सेवा, भक्ति और श्रद्धा के तार हृदय से जुड़े रहने चाहिए: आचार्यश्री वर्धमान सागरजी

आचार्यश्री के सान्निध्य में प्रवचनसार की गाथा में वैयावृत्य व्रत एवं सेवा प्रकरण की विवेचना

सीकर. शाबाश इंडिया। आचार्यश्री वर्धमान सागरजी के सान्निध्य में दोपहर को संघ के साधुओं एवं पंडित धर्मचंद गुरुजी की उपस्थिति में प्रवचनसार की गाथाओं में वैयावृत्य व्रत एवं सेवा प्रकरण की विवेचना चल रही है। इसमें बताया गया कि साधु भी अन्य बड़े साधु एवं आचार्य की सेवा करते समय छह काय के जीवों की रक्षा का भाव रखते हैं। साधु व्यवहार चारित्र एवं मूलगुणों का ध्यान रखते हुए सेवा करते हैं। आचार्यश्री बीच-बीच में साधुओं की जिज्ञासाओं का समाधान भी करते हैं। सेवा कार्य का आरंभ करना साधु का नहीं, श्रावक का कार्य होता है। श्रावक को भी विवेकपूर्वक सेवा कार्य करना चाहिए। डॉ. राजेश पंचोलिया के अनुसार आचार्यश्री ने बताया कि आचार्य भद्रबाहु के समय चामुंडराय भी उनके शिष्य के रूप में मुनि बने। उस समय साधुओं के तप एवं संयम के प्रभाव से देवता नगर बसाकर आहार देते थे। मुनि चामुंडराय आहार के बाद कमंडल भूल गए। जब वे वापस कमंडल लेने गए तो पता चला कि वहां कोई नगर था ही नहीं, बल्कि कमंडल वृक्ष पर टंगा था। उन्होंने इसे भी चारित्र पालन में दोष मानते हुए प्रायश्चित लिया। आचार्यश्री ने बताया कि दीक्षा गुरु आचार्यश्री धर्मसागरजी का इतना प्रबल पुण्य था कि जब उनका विहार होता था तो बिना सूचना के किशनगढ़ से 5 चौके आहार के लिए आ जाते थे। उस समय गुरु के प्रति भक्ति एवं श्रद्धा के तार हृदय से जुड़े रहते थे। धर्मसभा में उन्होंने कहा कि श्रावक-श्राविकाओं को साधु के ऊपर कुर्सी पर बैठना विनय गुण नहीं है।

आर्यिका माताजी ने बताया पुण्यवृद्धि का मार्ग

इसके पूर्व प्रातः आर्यिका श्री निर्मोहमति माताजी ने अपने उपदेश में बताया कि श्रावक किस प्रकार अपने पुण्य में वृद्धि कर सकता है और उसे किस प्रकार भगवान के दर्शन एवं धार्मिक कार्य करने चाहिए। उन्होंने कहा कि श्रावक मंदिर जाते समय नंगे पैर, बिना चप्पल के जाएगा तो अपने पैरों की रक्षा करने के साथ जीवों की रक्षा भी करेगा। इससे उसके पुण्य में वृद्धि होती है। मराठी एवं कन्नड़ भाषी आर्यिका श्री विनम्रवतीजी ने अपने उपदेश में अनेक कथाओं के माध्यम से धर्म के गुण एवं रहस्य बताए। पूज्य माताजी ने सीकर के पुण्य की प्रशंसा करते हुए बताया कि सीकर में दादा गुरु श्री धर्मसागरजी की समाधि हुई है तथा पूर्व आचार्यश्री अजीतसागरजी एवं अन्य साधुओं की दीक्षा स्थली भी रही है। अब 7 दीक्षाएं होने वाली हैं। आचार्य संघ के रूप में धर्मतीर्थ सीकर में पुण्य का समुद्र उमड़ आया है। उन्होंने कहा कि भगवान के दर्शन से अनेक उपवास का फल मिलता है। देव, शास्त्र एवं गुरु की भक्ति करने से पुण्य की प्राप्ति होती है। शक्ति के अनुसार सभी को आहारदान करना चाहिए। जिस प्रकार दूध का सार मलाई है, उसी प्रकार जीवन का सार आत्मा की भलाई है। उन्होंने एक सूरदास का प्रसंग सुनाते हुए कहा कि एक सूरदास भगवान के दर्शन करने प्रतिदिन बच्चों को लेकर जाता था। जब उससे किसी ने पूछा कि तुम्हें तो भगवान दिखाई नहीं देते, फिर क्यों जाते हो? तब उसने कहा, ''मुझे भगवान नहीं दिखते, किंतु मुझे तो भगवान देख रहे हैं।'' गुरु एवं भगवान के प्रति ऐसी ही दृढ़ भक्ति और श्रद्धा से पुण्य की प्राप्ति होती है।

शिक्षण शिविर में सैकड़ों श्रद्धालु ले रहे धर्मलाभ

समाज में धर्म एवं संस्कारों की वृद्धि के लिए आयोजित शिक्षण शिविर में हर आयु वर्ग के सैकड़ों भक्त भाग ले रहे हैं। संघ के मुनिराज एवं माताजी श्रद्धालुओं को धर्म का लाभ प्रदान कर रहे हैं। संघ की आहार व्यवस्था के लिए किशनगढ़, पारसोला, उदयपुर, इंदौर, सनावद, निवाई, टोंक आदि नगरों से भक्त नियमित रूप से पहुंचकर सेवा एवं आहारदान का लाभ ले रहे हैं।

मर्म चिकित्सा पर 52वीं कार्यशाला का भव्य आयोजन

जयपुर. शाबाश इंडिया

केसरगढ़ स्थित एक्यूप्रेशर मर्म चिकित्सालय में एक्यूप्रेशर सेवा समिति की ओर से मर्म विज्ञान विषय पर 52वीं कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में मुख्य अतिथि के रूप में एएसपी के.आर. मीणा उपस्थित रहे। प्रमुख वक्ता के रूप में गांधी नगर अस्पताल, जयपुर के वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी डॉ. शिशिर हाड़ा एवं लखनऊ के एक्यूपंक्चर विशेषज्ञ प्रो. एम. कुमार को आमंत्रित किया गया। कार्यशाला में प्राकृतिक योग साधना केंद्र, बापू नगर के वरिष्ठ चिकित्सक डॉ. के.पी. सिंह, रेडक्रॉस सोसायटी के डॉ. महेश कुमार शर्मा, सुजोक विशेषज्ञ महेश कुमार अग्रवाल एवं एक्यूप्रेशर सेवा समिति के अनेक सदस्य उपस्थित रहे। सेवा समिति के अध्यक्ष एवं मर्म चिकित्सा विशेषज्ञ डॉ. पीयूष त्रिवेदी ने मर्म चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने मर्म चिकित्सा के महत्व एवं स्वास्थ्य लाभों के बारे में जानकारी प्रदान की। कार्यशाला में भाग लेने वाले सभी चिकित्सकों को निःशुल्क मर्म पाठ्यक्रम में उपयोग की जाने वाली मर्म पुस्तक वितरित की गई। इस अवसर पर मर्म चिकित्सा, एक्यूप्रेशर एवं एक्यूपंक्चर के माध्यम से करीब 80 रोगियों का उपचार किया गया। कार्यशाला का समापन डॉ. के.पी. सिंह के अभिभाषण के साथ हुआ। इस अवसर पर सभी अतिथियों को एक्यूप्रेशर उपकरण भेंट किए गए। कार्यशाला में असम, शिलांग, मेघालय, सूरत, मुंबई, उत्तर प्रदेश, बिहार सहित विभिन्न राज्यों से मर्म चिकित्सा सीखने पहुंचे प्रतिभागियों ने डॉ. शिशिर हाड़ा से स्वास्थ्य संबंधी जानकारियां साझा कीं तथा चिकित्सा पद्धति से जुड़े विभिन्न विषयों पर चर्चा की।

स्वतंत्रता दिवस पर पर्यावरण संरक्षण की प्रस्तुतियों का आह्वान

महावीर इंटरनेशनल ने जल संरक्षण, प्लास्टिक मुक्त भारत एवं पर्यावरण संवर्धन के लिए चलाया जनजागरण अभियान

कुचामन सिटी. शाबाश इंडिया। महावीर इंटरनेशनल द्वारा पिछले कई वर्षों से समाजसेवा के साथ-साथ जल संरक्षण, प्लास्टिक मुक्त भारत एवं पर्यावरण संवर्धन के क्षेत्र में देशव्यापी जनजागरण अभियान चलाया जा रहा है। इसी अभियान के तहत आगामी 15 अगस्त, स्वतंत्रता दिवस के पावन अवसर पर राजकीय एवं निजी विद्यालयों, मदरसों तथा अकादमियों में विशेष जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। महावीर इंटरनेशनल परिवार ने सभी शिक्षण संस्थानों से अपील की है कि स्वतंत्रता दिवस के सांस्कृतिक कार्यक्रमों में पर्यावरण संरक्षण को केंद्र में रखते हुए विद्यार्थियों द्वारा कम से कम एक प्रस्तुति अवश्य शामिल की जाए। इसमें लघु नाटिका, ओजस्वी कविता, भाषण, भक्ति गीत अथवा अन्य रचनात्मक प्रस्तुतियों के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया जा सकता है।

तीन प्रमुख विषयों पर जागरूकता का संदेश

1. <u>जल संरक्षण :</u> वर्षा जल संचयन, जल का पुनर्चक्रण तथा पानी की हर बूंद बचाने का संदेश विद्यार्थियों के माध्यम से जन-जन तक पहुंचाया जाए।

2. <u>एकल उपयोग प्लास्टिक का बहिष्कार:</u> एकल उपयोग प्लास्टिक से होने वाले दुष्परिणामों, मिट्टी के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव तथा पशु-पक्षियों के लिए इसके घातक परिणामों के प्रति समाज को जागरूक किया जाए।

3. <u>वृक्षारोपण एवं मियावाकी पद्धति:</u> अधिक से अधिक पौधे लगाने के साथ-साथ उनकी नियमित देखभाल एवं संरक्षण का संकल्प लिया जाए। मियावाकी पद्धति से सघन पौधरोपण को भी प्रोत्साहित करने पर बल दिया गया।

महावीर इंटरनेशनल के वीर रामावतार गोयल ने कहा कि युवा पीढ़ी ही देश का भविष्य है। यदि आज हमारे विद्यार्थी पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक होंगे तो निश्चित रूप से हम एक स्वच्छ, हरित एवं समृद्ध भारत का निर्माण कर सकेंगे। उन्होंने कहा कि विद्यालयों में विद्यार्थियों द्वारा दी जाने वाली ऐसी प्रस्तुतियां हजारों युवाओं में प्रकृति के प्रति संवेदना एवं जिम्मेदारी की भावना जागृत करेंगी।

धर्म से ही सभी समस्याओं का समाधान: मुनिश्री विजयेश सागरजी महाराज

देव-शास्त्र-गुरु के प्रति श्रद्धा और विश्वास जरूरी: आचार्यश्री विहर्ष सागरजी महाराज

शाबाश इंडिया। आर.के. कम्युनिटी सेंटर में आयोजित धार्मिक कार्यक्रम का शुभारंभ आचार्य 108 श्री वर्धमान सागरजी महाराज, आचार्य 108 श्री विराग सागरजी महाराज एवं आचार्य 108 श्री विशुद्ध सागरजी महाराज के चित्रों के अनावरण एवं दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। पाद प्रक्षालन का सौभाग्य भिंड एवं ग्वालियर से पधारे भक्तों को प्राप्त हुआ। इस अवसर पर पूर्वाचार्यों के अर्घ्य भी समर्पित किए गए। कार्यक्रम का सफल संचालन कमल बैद ने किया। मुनि 108 श्री विजयेश सागरजी महाराज ने प्रवचन में कहा कि आज हमारे पास जो कुछ भी है, वह धर्म के कारण है। धर्म से ही जीवन में सुख प्राप्त होता है। धर्म के लिए धर्म करना चाहिए। हमारी सभी समस्याओं का समाधान धर्म में है। हमारा भाव सभी के कल्याण का होना चाहिए। उन्होंने कहा कि हमारे भगवान वीतरागी एवं हितोपदेशी होते हैं। भगवान और गुरु से भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है। मंत्र-तंत्र के भरोसे नहीं, बल्कि धर्म एवं गुरु की शरण में विश्वास रखना चाहिए। उन्होंने कहा कि संसार में सभी किसी न किसी रूप में दुखी हैं। व्यक्ति कहीं भी चला जाए, वास्तविक समाधान गुरु ही प्रदान कर सकते हैं। यदि कुंडली में कोई दोष बताया जाए तो साधु-संतों की सेवा प्रारंभ कर देनी चाहिए। इससे जीवन की अनेक बाधाएं दूर हो सकती हैं।

देव, शास्त्र एवं गुरु के प्रति श्रद्धा जरूरी

आचार्य 108 श्री विहर्ष सागरजी महाराज ने कहा कि तत्त्वार्थ सूत्र के पांचवें अध्याय में द्रव्य एवं तत्त्वों का विवेचन किया गया है। उन्होंने जल एवं मिट्टी का उदाहरण देते हुए कहा कि जल तत्त्व और पृथ्वी तत्त्व साथ रहते हैं। उन्होंने कहा कि आज माता-पिता अपने बच्चों के आधुनिक नाम रखते हैं, जबकि नामकरण का दायित्व गुरु पर छोड़ देना चाहिए और गुरु से नाम लिखवाना चाहिए। जीवन में नाम का भी बहुत महत्व है। जो व्यक्ति माता-पिता की बात नहीं सुनता और भगवान की बात नहीं सुनता, वह आगे चलकर डॉक्टर की बात जरूर सुनेगा।

सुरों ने तोड़ी सीमाएं, प्रतिभा ने रचा इतिहास : सुर-संगम का भव्य समापन

शाबाश इंडिया

मानव सेवा ट्रस्ट राजस्थान द्वारा आयोजित **''सुर-संगमः अखिल भारतीय दृष्टिबाधित गायन प्रतियोगिता''** का दो दिवसीय भव्य आयोजन झालाना डूंगरी स्थित श्रीमती रमाबाई अंबेडकर कांफ्रेंस हॉल में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। देशभर में समावेशिता एवं दिव्यांगजन सशक्तीकरण का संदेश देने वाले इस राष्ट्रीय आयोजन में देश के 13 राज्यों से दृष्टिबाधित प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रतिभागियों ने अपनी शानदार गायन प्रस्तुतियों से न केवल निर्णायक मंडल एवं दर्शकों का मन जीता, बल्कि यह भी सिद्ध किया कि प्रतिभा किसी शारीरिक सीमा की मोहताज नहीं होती। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि भारत के प्रसिद्ध कानूनविद एवं विश्व हिंदी साहित्य परिषद के कुलाधिपति डॉ. एच.सी. गनेशिया रहे। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि यह केवल एक संगीत प्रतियोगिता नहीं, बल्कि प्रतिभा, आत्मविश्वास एवं समान अवसर का उत्सव है। दृष्टिबाधित प्रतिभागियों ने जिस आत्मविश्वास एवं उत्कृष्टता के साथ अपनी प्रस्तुतियां दी हैं, वह पूरे समाज के लिए प्रेरणादायी है। संगीत की कोई सीमा नहीं होती और इन प्रतिभाओं ने अपने सुरों के माध्यम से यह सिद्ध कर दिया है कि दृष्टि की कमी प्रतिभा की उड़ान को कभी रोक नहीं सकती। ट्रस्ट अध्यक्ष एन.एल. वर्मा, सेवानिवृत्त आरएएस ने कहा कि सुर-संगम केवल एक प्रतियोगिता नहीं, बल्कि प्रतिभा, आत्मविश्वास एवं समावेशिता का उत्सव है। देश के 13 राज्यों से आए प्रतिभागियों ने अपनी प्रतिभा के माध्यम से यह संदेश दिया है कि अवसर मिले तो हर स्वर अपनी पहचान बना सकता है। स्वास्थ्य कल्याण होम्योपैथिक मेडिकल कॉलेज एवं रिसर्च सेंटर के वरिष्ठ होम्योपैथ, आचार्य, चिकित्सक, ट्रस्ट सदस्य एवं मीडिया प्रभारी डॉ. राजीव सक्सेना ने बताया कि बाल वर्ग प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार क्रमशः श्रीगंगानगर की गुर्जोत, श्रीगंगानगर की गरिमा एवं जयपुर के गर्वित अग्रवाल ने प्राप्त किए। युवा वर्ग में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार क्रमशः महाराष्ट्र की पूजा शिंद्रे, पश्चिम बंगाल के बेतव शेख एवं हरियाणा के दीपक ने जीते। विजेताओं को प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार के रूप में क्रमशः 11,000, 7,100 एवं 5,100 रुपये के साथ ट्रॉफी एवं प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए। विशेष अतिथियों के रूप में समाजसेविका उषा मोदी, डॉ. नूपुर जैन, सहायक प्रोफेसर, पूर्णिमा कॉलेज, सेवानिवृत्त आरएएस एस. आलम, डॉ. गिरेन्द्र तलेगांवकर, डॉ. हेमंत भट्ट, डॉ. सुनीता शर्मा, सेवानिवृत्त जेलर जगदीश प्रसाद चांदोलिया, ओमप्रकाश पोद्दार सहित अनेक गणमान्य अतिथियों ने अपनी गरिमामयी उपस्थिति से आयोजन की शोभा बढ़ाई। सभी सहयोगकर्ताओं, प्रतिभागियों एवं स्वयंसेवकों को प्रशस्ति-पत्र एवं प्रतीक-चिह्न प्रदान किए गए। प्रतिभागियों के उत्साह एवं उपलब्धि को देखते हुए समारोह में उपस्थित अतिथियों एवं दर्शकों ने तालियों की गड़गड़ाहट से विजेताओं का अभिनंदन किया।

''प्रकृति बचाओ, जीवन बचाओ'' के तहत वृक्षारोपण महाभियान शुरू

निवाई. शाबाश इंडिया

रविवार को हिंदू सेवा मंच की ओर से निवाई स्थित दादू दयाल गौशाला, किवाड़ा में प्रकाश दास महाराज के सान्निध्य में ''प्रकृति बचाओ, जीवन बचाओ'' अभियान के अंतर्गत वृक्षारोपण महाभियान की शुरूआत की गई। हिंदू सेवा मंच के अध्यक्ष दिनेश अग्रवाल ने बताया कि मंच ने सावन माह में 500 पौधे लगाने का संकल्प लिया है। अभियान की शुरूआत शिव मंदिर में पूजा-अर्चना कर एवं अच्छी बारिश की कामना के साथ की गई। इसके बाद शीशम, नीम, जामुन एवं आम के 300 पौधे लगाए गए। पौधों की नियमित देखभाल एवं संरक्षण की जिम्मेदारी आश्रम प्रबंधन को सौंपी गई। इस अवसर पर डॉ. संजीव कुमार सिंघल, पंडित ताराचंद्र शर्मा, प्रकाश मेडतवाल, संत कुमार शर्मा, नवीन गोदिका सहित अनेक गणमान्य अतिथि उपस्थित रहे।

प्रो. डॉ. राजीव सक्सेना को मिला ''मुंशी प्रेमचंद साहित्य रत्न सम्मान-2026''

जयपुर. शाबाश इंडिया। कथा एवं उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद की 146वीं जयंती के अवसर पर अखिल भारतीय कायस्थ महासभा की ओर से दुर्गापुरा स्थित कृषि विज्ञान केंद्र के सियाम सभागार में गरिमामय साहित्यिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में जयपुर के वरिष्ठ साहित्यकार एवं कवि प्रो. डॉ. राजीव सक्सेना को साहित्य के क्षेत्र में उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए प्रतिष्ठित ''मुंशी प्रेमचंद साहित्य रत्न सम्मान-2026'' से सम्मानित किया गया। उन्हें यह सम्मान कविता लेखन एवं समीक्षा वर्ग में उत्कृष्ट लेखन एवं साहित्यिक योगदान के लिए प्रदान किया गया। सम्मान स्वरूप संस्था के पदाधिकारियों ने उन्हें शॉल एवं दुपट्टा ओढ़ाकर स्मृति-चिह्न एवं प्रशस्ति-पत्र प्रदान किया तथा बधाई दी। प्रो. डॉ. राजीव सक्सेना वर्तमान में स्वास्थ्य कल्याण होम्योपैथिक मेडिकल कॉलेज एवं रिसर्च सेंटर में वरिष्ठ आचार्य एवं चिकित्सक के रूप में सेवाएं दे रहे हैं।

देशभक्ति : मात्र शब्द नहीं, जीवन-मूल्य

मातृभूमि की पवित्र धूलि से अभिषिक्त इस पुण्य-आंगन में, अधिक समय न लेते हुए मैं एक ऐसे भाव को प्रस्तुत करने जा रही हूं, जो हमारे जीवन का प्राणतत्त्व है—देशभक्ति! देशभक्ति केवल एक शब्द नहीं, अपितु व्यक्ति के व्यक्तित्व की गरिमा है। यदि देशप्रेम एक सुगंधित पुष्प है, तो देशभक्ति उसका अमृततुल्य फल है। जैसे जननी और जन्मभूमि स्वर्ग से भी महान होती हैं, वैसे ही देश की पावन परंपरा, संस्कृति, अस्मिता एवं गरिमा की रक्षा करना हमारे प्राणों से भी बढ़कर है। जीवन का दान देने वाली जननी तथा जीवन को आधार प्रदान करने वाली मातृभूमि—इन दोनों के प्रति अखंड श्रद्धा ही सच्ची देशभक्ति है। आज का यह दिव्य दिवस वह दिवस है, जब हमारा देश स्वतंत्र हुआ था। इस अमूल्य स्वाधीनता के पीछे अनगिनत कर्मवीरों, शूरवीरों, साहसी योद्धाओं एवं सत्याग्रहियों का अनमोल, अमिट और पूजनीय योगदान तथा समर्पण रहा है। इसीलिए हम इस पर्व को अमर शहीदों के यशोगान के लिए सर्वथा उपयुक्त मानते हैं। परंतु स्वतंत्रता केवल अर्जित करने की वस्तु नहीं है, बल्कि उसका संवर्धन एवं संरक्षण हमारी सर्वोपरि जिम्मेदारी है। आज जब हम तिरंगे ध्वज को लहराते हैं, तब वह केवल एक वस्त्र-खंड मात्र नहीं, बल्कि सहस्त्रों बलिदानों का सजीव प्रतीक बनकर हमारे सामने उपस्थित होता है। हमें प्राप्त इस स्वतंत्रता का मुख्य आधार हमारे शूरवीरों का त्याग, बलिदान एवं राष्ट्रप्रेम ही था। उन्होंने जो भी कर्म किए, वे सभी गीता के निष्काम कर्मयोग बन गए। राष्ट्ररक्षा के रणक्षेत्र में वे वीर, महान धनुर्धर अर्जुन से कम नहीं थे। इसीलिए वे आज भी हमारे लिए पूजनीय हैं। जिस प्रकार श्रीकृष्ण और अर्जुन का संबंध अटूट था, वैसे ही इन वीरों का अपनी मातृभूमि से था। वास्तव में महान वे ही लोग होते हैं, जो अपने निस्वार्थ कर्मों के द्वारा परिभाषित होते हैं। हमारी वर्तमान पीढ़ी को यह आत्मसात करना होगा कि देशभक्ति केवल वाणी अथवा घोषणाओं तक सीमित नहीं है। यह हमारे आचरण, कर्तव्यपरायणता और सेवा-व्रत में स्पष्ट रूप से प्रतिबिंबित होनी चाहिए। सच्चे अर्थों में महापुरुष वे हैं, जो अपने कर्मों के प्रभाव से परिवार, ग्राम, प्रदेश, राष्ट्र और संपूर्ण विश्व में सम्मानित होते हैं। किंतु वर्तमान युग में, जब भोगवाद, स्वार्थसिद्धि और नैतिक पतन की प्रवृत्तियां राष्ट्रचेतना को धूमिल कर रही हैं, हमारी पीढ़ी का यह आत्मसंकल्प होना चाहिए कि देशभक्ति केवल मुखर भावाभिव्यक्ति या घोषणाओं में नहीं, बल्कि निष्कलंक सेवा, निःस्वार्थ परिश्रम एवं त्यागमय आचरण में प्रकट हो। अतः आज के इस महापर्व पर हम सभी यह दृढ़ प्रतिज्ञा करें कि हम अपने जीवन की प्रत्येक श्वास, प्रत्येक क्षण और प्रत्येक कर्म को राष्ट्रोत्थान के लिए समर्पित करेंगे। अपने आचरण एवं कर्मों से परिवार, ग्राम, प्रदेश और संपूर्ण राष्ट्र में एक अनुकरणीय आदर्श स्थापित करेंगे तथा भारतमाता को वैभव के परम शिखर पर पहुंचाने के लिए अखंड रूप से प्रयासरत रहेंगे।

वंदे मातरम्! जयतु भारतम्!

मरकर के वो अमर हो गए, हम जीकर के क्या पाए हैं?
मरना उनका पर्व हो गया, दुश्मन भी गुण को गाए हैं।
ओ शहीदों के मठ पर हम सब फूल चढ़ाने जाते हैं,
पत्थर के मठ पर ही देखो, हम सब सुकून पा जाते हैं।
पत्थर पर मानो फूल चढ़ा, तुम सब ये साबित करते हो,
ये कोई पाषाण नहीं, प्रतिमा नहीं, साक्षात यहां तुम बैठे हो।
जिसके पाषाण में ये दम है कि सहसा तुम झुक जाते हो,
अश्रु के अंश दो अश्रु चढ़ा, परम गौरव पा जाते हो।

जैसा कि आप सभी जानते हैं कि स्वतंत्रता संग्राम में सभी धर्मों एवं जातियों, विभिन्न समूहों, अमीर-गरीब, अनपढ़-शिक्षित, नारी-पुरुष—सभी की बराबर भूमिका रही। तभी जाकर हमारा भारत देश स्वतंत्र हुआ। यह अलग बात है कि कुछ महान व्यक्तित्वों के नेतृत्व में कुछ नाम इतिहास के पन्नों में प्रमुखता से अंकित हो गए, लेकिन इस स्वतंत्रता संग्राम में भूमिका और सहभागिता देश के प्रत्येक वर्ग की रही। हर व्यक्ति ने अपनी क्षमता और सामर्थ्य के अनुसार राष्ट्र की स्वतंत्रता में योगदान दिया। उन्होंने जो भी कर्म किया, वह गीता के कर्मयोग बन गया। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम उन सभी ज्ञात-अज्ञात स्वतंत्रता सेनानियों के त्याग और बलिदान को स्मरण करें तथा उनके आदर्शों को अपने जीवन में उतारें। देशभक्ति केवल राष्ट्रगान गाने, तिरंगा फहराने या नारों तक सीमित न रहे, बल्कि हमारे प्रत्येक कर्म में राष्ट्रहित सर्वोपरि दिखाई दे। आइए, इस स्वतंत्रता दिवस पर हम संकल्प लें कि अपने अधिकारों के साथ अपने कर्तव्यों का भी पूरी निष्ठा से पालन करेंगे। देश की एकता, अखंडता, संस्कृति, प्रकृति और गौरव की रक्षा करेंगे तथा अपने कर्मों से भारत को और अधिक सशक्त, समृद्ध एवं गौरवशाली बनाएंगे।

वंदे मातरम्! जय हिंद! जयतु भारतम्!

— ऋचा चंद्राकर "तत्त्वाकांक्षी"

अष्टाह्निका महापर्व के त्यागी व्रतियों के अनुमोदनार्थ अभिनंदन समारोह संपन्न

जैन समाज के एकमात्र श्रावक श्रेष्ठी एवं सातवीं बार कैलाश मानसरोवर यात्रा करने वाले अनिल जैन गदिया का किया सम्मान

जयपुर. शाबश इंडिया। दिगंबर जैन मंदिर, महारानी फार्म, गायत्री नगर, जयपुर मंदिर प्रबंध समिति के तत्वावधान में अष्टाह्निका महापर्व के दौरान त्याग-व्रत करने वाले व्रतियों के अनुमोदनार्थ अभिनंदन समारोह आदिनाथ भवन, गायत्री नगर में आयोजित किया गया। समारोह में शाश्वत तीर्थ क्षेत्र सम्मेद शिखरजी में अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर 9 दिवसीय उपवास करने वाले गायत्री नगर निवासी राजकुमार बाकलीवाल, श्रीमती विमला बाकलीवाल, श्रीमती उर्मिला श्रीमाल एवं श्रीमती रेनू बाकलीवाल का सम्मान किया गया। मंदिर प्रबंध समिति के अध्यक्ष अरुण शाह के निर्देशन में आयोजित समारोह में मंदिर प्रबंध समिति के पदाधिकारियों एवं समाज के गणमान्य महानुभावों ने त्यागी व्रतियों का सम्मान कर उनकी तपस्या की अनुमोदना की। अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन युवा परिषद के राष्ट्रीय महामंत्री उदयभान जैन, जयपुर ने बताया कि इस अवसर पर जैन समाज के एकमात्र श्रावक श्रेष्ठी एवं गायत्री नगर निवासी अनिल जैन गदिया बयाने वालों का भी भव्य स्वागत किया गया। अनिल जैन भारत सरकार की ओर से सातवीं बार प्रथम बैच में कैलाश मानसरोवर यात्रा कर लौटे हैं। मंदिर प्रबंध समिति की ओर से उनके सम्मान एवं त्यागी व्रतियों की अनुमोदना में शोभायात्रा निकाली गई।

धाकड़ सेवा संस्थान का सावन उत्सव उत्साह और उल्लास के साथ संपन्न

उदयपुर. शाबाश इंडिया

धाकड़ सेवा संस्थान, उदयपुर द्वारा सावन उत्सव 2026 का आयोजन हर्षोल्लास, सामाजिक एकता एवं सेवा भावना के साथ किया गया। संस्थान के 15 वर्ष पूर्ण होने की खुशी के साथ आयोजित कार्यक्रम में समाजसेवा, पर्यावरण संरक्षण एवं स्वास्थ्य जागरूकता जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर भी चर्चा हुई। कार्यक्रम में 80 से अधिक सदस्यों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता कर इसे यादगार बना दिया। कार्यक्रम के स्वागत उद्बोधन में संस्थान के संरक्षक डॉ. लक्ष्मीलाल धाकड़ ने कहा कि संस्थान के 15 वर्ष पूर्ण होना सभी के लिए गर्व एवं प्रसन्नता का अवसर है। यह केवल 15 वर्षों का सफर नहीं, बल्कि समाज को जोड़ने, सेवा भावना को मजबूत करने और एक-दूसरे के सुख-दुःख में साथ खड़े रहने की निरंतर यात्रा है। संस्थान के सचिव संजय धाकड़ ने कहा कि आज जिस मंच पर समाज के लोग एकत्रित हुए हैं, उसके पीछे वरिष्ठजनों एवं साथियों के वर्षों के परिश्रम, समर्पण एवं सेवा भावना का महत्वपूर्ण योगदान है। उन्होंने सभी के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि हमारा प्रयास रहेगा कि धाकड़ सेवा संस्थान की विशिष्ट पहचान सेवा, संस्कार, सहयोग एवं सामाजिक एकता के रूप में बनी रहे। उन्होंने कहा कि ऐसे सामूहिक आयोजन निरंतर होने चाहिए, जिनमें परिवारों की भागीदारी बढ़े और नई पीढ़ी अपनी जड़ों, संस्कारों एवं समाज से मजबूती से जुड़ी रहे। संस्थान के अध्यक्ष डी.पी. धाकड़ ने पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में किए जा रहे प्रयासों की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि संस्थान द्वारा समय-समय पर पौधारोपण अभियान चलाए जा रहे हैं। साथ ही सीड बॉल के माध्यम से सामुदायिक भूमि एवं पहाड़ी क्षेत्रों में हरियाली बढ़ाने, मिट्टी के कटाव को रोकने तथा भूजल स्तर में वृद्धि के लिए निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं। इस उद्देश्य से लोगों को निःशुल्क पौधे एवं सीड बॉल वितरित किए जा रहे हैं। कार्यक्रम में हृदय स्वास्थ्य को लेकर विशेष जागरूकता सत्र आयोजित किया गया। डॉ. सी.पी. पुरोहित ने हृदय रोगों से जुड़े जटिल एवं गंभीर मामलों, उनके उपचार तथा आधुनिक जीवनशैली के कारण बढ़ते हृदय रोगों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने उपस्थित सदस्यों की जिज्ञासाओं एवं सवालों के जवाब देते हुए समय रहते सावधानी बरतने, स्वस्थ जीवनशैली अपनाने तथा हृदय रोगों से बचाव के उपायों पर प्रकाश डाला। इस दौरान डी.पी. धाकड़ द्वारा उपलब्ध कराई जा रही निःशुल्क हृदय बचाव किट के महत्व पर भी चर्चा हुई। बताया गया कि आपात स्थिति में अस्पताल पहुंचने और प्राथमिक चिकित्सा मिलने के बीच का समय बेहद महत्वपूर्ण होता है तथा यह किट उस दौरान जीवनरक्षा में उपयोगी साबित हो सकती है। हृदय स्वास्थ्य संबंधी इस महत्वपूर्ण व्याख्यान के आयोजन में सहयोग के लिए विनीत जैन का आभार व्यक्त किया गया। सावन उत्सव के दौरान माहौल पूरी तरह उल्लासमय रहा। सदस्यों ने पौधारोपण के साथ दिनभर हंसी-खुशी, नृत्य, गीत, चुटकुले एवं विभिन्न मनोरंजक खेलों में उत्साहपूर्वक भाग लिया। पारिवारिक मेल-जोल एवं आत्मीयता से भरे इस आयोजन ने सभी को खूब आनंदित किया। कार्यक्रम के अंत में सभी ने स्वादिष्ट भोजन का आनंद लिया। खेल प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पारितोषिक प्रदान कर सम्मानित किया गया। समापन अवसर पर सफल एवं शानदार आयोजन के लिए संचालक मंडल का आभार व्यक्त किया गया। कार्यक्रम ने यह संदेश दिया कि जब समाज सेवा, संस्कार, पर्यावरण, स्वास्थ्य एवं आपसी सहयोग को साथ लेकर आगे बढ़ता है, तो ऐसे आयोजन केवल उत्सव नहीं रहते, बल्कि समाज को जोड़ने और नई पीढ़ी को प्रेरणा देने का माध्यम बन जाते हैं।

सहस्रकूट विज्ञातीर्थ गुंसी में 13 अगस्त को हरियाली अमावस्या धूमधाम से मनाई जाएगी

माताजी ने दिया भक्ति, श्रद्धा, त्याग एवं समर्पण का संदेश

गुंसी. शाबाश इंडिया। श्री दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र सहस्रकूट विज्ञातीर्थ, गुंसी में परम पूज्य गणिनी आर्यिका विज्ञाश्री माताजी के पावन सान्निध्य में धार्मिक आयोजन संपन्न हुआ। प्रातः अभिषेक एवं शांतिधारा के पश्चात विधान के अंतर्गत आयोजित धार्मिक अनुष्ठानों में श्रद्धालुओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। बाहर से पधारे श्रद्धालुओं ने गुरु मां के दर्शन एवं आशीर्वाद का लाभ प्राप्त किया। प्रतीक जैन सेठी ने बताया कि गुरु मां ने श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए कहा कि धर्म जीवन को सही दिशा और मन को शांति प्रदान करता है। उन्होंने सभी को भक्ति, श्रद्धा, त्याग एवं समर्पण का संदेश देते हुए निरंतर धर्म के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। माताजी ने कहा कि प्रभु के प्रति सच्चा समर्पण बिना किसी शर्त एवं अहंकार के होना चाहिए। जब आत्मा में प्रभु के प्रति निश्छल समर्पण का भाव जागृत होता है, तभी धर्म की वास्तविक अनुभूति की जा सकती है। प्रभु भक्ति में स्वयं को समर्पित कर देना कर्मों की निर्जरा का सहज मार्ग है। कार्यक्रम के दौरान संपूर्ण प्रांगण प्रभु भक्ति एवं जयकारों से गुंजायमान रहा। धार्मिक आयोजन में बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे और धर्मलाभ अर्जित किया। प्रतीक जैन सेठी ने बताया कि परम पूज्य भारत गौरव आर्यिका रत्न श्री 105 विज्ञाश्री माताजी के ससंघ सान्निध्य में ब्रह्मचारिणी सुशीला देवी एवं ब्रह्मचारी मनोज जैन की जैनेश्वरी दीक्षा का भव्य आयोजन भी किया जाएगा। साथ ही 13 अगस्त को हरियाली अमावस्या का पर्व धूमधाम से मनाया जाएगा।

सांसारिक उलझनों से दूर रहें : आर्यिका रत्न विष्णु प्रभा

जयपुर. शाबाश इंडिया

गुणवान व्यक्तियों की संगति से ज्ञान में वृद्धि होती है और ज्ञानवान की विनय करने से ज्ञान बढ़ता है। उक्त विचार कमला नेहरू नगर में चातुर्मास कर रहीं आर्यिका रत्न श्री 105 विष्णु प्रभा माताजी ने प्रवचन के दौरान व्यक्त किए। उन्होंने उपस्थित श्रावकों से कहा कि आजकल लोग जन्मदिन होटल, रेस्टोरेंट एवं रिजॉर्ट आदि में मनाते हैं, जिसका कोई औचित्य नहीं है। उन्होंने कहा कि जन्मदिन तभी सार्थक है, जब गुरु चरणों में विनय, श्रद्धा एवं भक्ति के साथ पूजा-अर्चना कर उनकी आराधना की जाए। सामाजिक कार्यकर्ता जय कुमार जैन बड़जात्या ने बताया कि आर्यिका श्री ने अपने दादागुरु तपस्वी सम्राट सन्मति सागर महाराज के जीवन चरित्र का उदाहरण देते हुए कहा कि उन्होंने घोर तपश्चर्या के माध्यम से जीवन में भक्ति को आराधना का मार्ग बनाया। जिस तरह

बिना लोभ-लालच के संसार नहीं चलता, उसी तरह कर्मों के बंधन ढीले किए बिना मोक्ष मार्ग की राह नहीं मिलती। संघस्थ बाल ब्रह्मचारिणी शैली दीदी ने बताया कि आर्यिका विष्णु प्रभा माताजी के पाद प्रक्षालन एवं शास्त्र भेंट का सौभाग्य सुशील एवं अभिषेक जैन परिवार को प्राप्त हुआ। पुण्यार्जक परिवार को आशीर्वाद देते हुए आर्यिका विष्णु प्रभा ने कहा कि संसार की उलझनों से जितनी जल्दी निकल जाओगे, उतना ही अच्छा है, वरना उलझते ही रह जाओगे। किसी के बिना कोई काम रुकता नहीं है। यह जीवन का भ्रम है। इस भ्रम से बाहर नहीं निकले तो अनादि काल से चला आ रहा संसार यूं ही बना रहेगा और जीवन 'आयाराम-गयाराम' होता रहेगा।

देश-विदेश के 69 लघुकथाकारों में डॉ. सत्यवान सौरभ और डॉ. प्रियंका सौरभ की लघुकथाएं शामिल

''मेरी श्रेष्ठ लघुकथा-2025'' में डॉ. प्रियंका सौरभ की ''चार बजे की मां'' और डॉ. सत्यवान सौरभ की 'नई परंपरा' चयनित

हिसार. शाबाश इंडिया

हिंदी लघुकथा के क्षेत्र में साहित्यकार दंपती डॉ. प्रियंका सौरभ एवं डॉ. सत्यवान सौरभ के लिए यह गौरव का विषय है कि उनकी लघुकथाओं को देश-विदेश के 69 लघुकथाकारों की चयनित रचनाओं के संकलन ''मेरी श्रेष्ठ लघुकथा-2025'' में स्थान मिला है। संकलन का संपादन चंद्रेश कुमार छतलानी ने किया है। संकलन में डॉ. प्रियंका सौरभ की लघुकथा ''चार बजे की मां'' तथा डॉ. सत्यवान सौरभ की लघुकथा ''नई परंपरा'' को शामिल किया गया है। दोनों रचनाओं का चयन लघुकथा के विधागत अनुशासन, भाषा, शिल्प एवं प्रस्तुति को ध्यान में रखते हुए किया गया है। ''लघुकथा दुनिया'' की ओर से रचनाकारों को भेजी गई जानकारी के अनुसार ''मेरी श्रेष्ठ लघुकथा-2025'' का ई-पुस्तक संस्करण प्रकाशित हो चुका है और यह पाठकों एवं रचनाकारों के लिए निःशुल्क उपलब्ध है। संकलन के संपादन के दौरान प्राप्त रचनाओं में आवश्यकतानुसार भाषा, शिल्प एवं प्रस्तुति संबंधी संपादन किया गया। विधागत अनुशासन के अनुरूप नहीं आने वाली कुछ रचनाओं को चयन से बाहर भी किया गया। डॉ. प्रियंका सौरभ की ''चार बजे की मां'' और डॉ. सत्यवान सौरभ की ''नई परंपरा'' का चयन उनकी साहित्यिक सक्रियता एवं लघुकथा लेखन में निरंतर योगदान का महत्वपूर्ण प्रमाण है। दोनों रचनाकार कविता, दोहा, लघुकथा एवं सामाजिक सरोकारों से जुड़े लेखन में सक्रिय हैं। संकलन में देश के विभिन्न हिस्सों के साथ विदेशों से जुड़े लघुकथाकारों की रचनाओं को भी शामिल किया गया है। आयोजकों का मानना है कि यह साझा संकलन पाठकों के साथ-साथ हिंदी लघुकथा के अध्ययन एवं शोध से जुड़े शोधार्थियों के लिए भी उपयोगी सिद्ध होगा। इस साहित्यिक उपलब्धि पर साहित्य जगत से जुड़े लोगों ने डॉ. प्रियंका सौरभ एवं डॉ. सत्यवान सौरभ को बधाई एवं शुभकामनाएं दी हैं। दोनों रचनाकारों ने अपनी लघुकथाओं को संकलन में स्थान देने के लिए ''लघुकथा दुनिया'' की टीम एवं संपादक चंद्रेश कुमार छतलानी के प्रति आभार व्यक्त किया।

श्री जैन युवा मंच की नई कार्यकारिणी का गठन

जयंतीलाल कांकरिया अध्यक्ष एवं नितेश सालेचा सचिव नियुक्त

मदुरै, तमिलनाडु. शाबाश इंडिया

श्री जैन युवा मंच की सामान्य बैठक 9 अगस्त 2026, रविवार को आराधना भवन में आयोजित हुई। बैठक में आगामी दो वर्षों के लिए नई कार्यकारिणी का गठन किया गया। इस दौरान सर्वसम्मति से विभिन्न पदाधिकारियों एवं कार्यकारिणी सदस्यों के नामों की घोषणा की गई। श्रीसंघ प्रवक्ता दिनेश सालेचा ने बताया कि नई कार्यकारिणी में जयंतीलाल कांकरिया को अध्यक्ष, धनराज चोपड़ा एवं महावीर श्रीश्रीमाल को उपाध्यक्ष, नितेश सालेचा को सचिव तथा कल्पेश बागरेचा को सह-सचिव नियुक्त किया गया। वहीं राकेश गोलेछा को कोषाध्यक्ष एवं पंकज बालड़ को सह-कोषाध्यक्ष बनाया गया। कार्यकारिणी सदस्यों में हेमंत मोदी, जसराज छाजेड, चिराग नानेचा, विपुल पालगोता, दिलीप सालेचा, निखिल सोलंकी एवं श्रीपाल चौधरी को शामिल किया गया। बैठक में नवगठित कार्यकारिणी को आगामी दो वर्षों के दौरान श्री जैन युवा मंच की गतिविधियों को सुचारु रूप से संचालित करने, संगठन को मजबूत बनाने तथा समाजहित के कार्यों को आगे बढ़ाने की जिम्मेदारी सौंपी गई। उपस्थित सदस्यों ने नवनियुक्त पदाधिकारियों को शुभकामनाएं देते हुए संगठन के उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

अगस्त क्रांति के उपलक्ष्य में कविकल्प की गोष्ठी आयोजित

कोलकाता. शाबाश इंडिया

महानगर की प्रतिष्ठित साहित्यिक संस्था बंगीय हिंदी परिषद में अगस्त क्रांति की स्मृति में कविकल्प की मासिक गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी की अध्यक्षता प्रसिद्ध कवि डॉ. गिरिधर राय ने की। प्रधान अतिथि के रूप में देवरिया से पधारे हिंदी एवं संस्कृत के विद्वान डॉ. मधुसूदन मणि त्रिपाठी तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में पंजाब के कथाकार एवं कवि भूपिंदर सिंह देओत उपस्थित रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ प्रणति ठाकुर की सरस्वती वंदना से हुआ। स्वागत वक्तव्य देते हुए परिषद के मंत्री डॉ. राजेंद्र नाथ त्रिपाठी ने परिषद की ऐतिहासिक विरासत से उपस्थित लोगों को परिचित कराया तथा अगस्त क्रांति की महत्ता पर प्रकाश डाला। काकोरी कांड के नायकों के प्रति विनम्र श्रद्धाभाव प्रकट करते हुए कवियों ने अपनी काव्यांजलि प्रस्तुत की। अध्यक्षीय वक्तव्य में डॉ. गिरिधर राय ने परिषद के साहित्यिक आयोजनों की सराहना की। प्रधान अतिथि डॉ. मधुसूदन मणि त्रिपाठी ने परिषद में आमंत्रित किए जाने पर आभार व्यक्त किया तथा परिषद के साहित्यिक संकल्पों की सराहना की। उन्होंने अपनी कविताओं की प्रस्तुति से श्रोताओं का मन मोह लिया। समारोह में विनय कुमार शर्मा, प्रवेश पटियालवी, कमल पुरोहित, रामपुकार सिंह, अय्यूब वारसी, ब्रजेश कुमार त्रिपाठी, प्रतिभा सिंह, लवलेश कुमार, मनोज मिश्र, गणेशनाथ तिवारी, मनोज कुमार मिश्र, रामनारायण झा, बीना रजक, विश्वजीत ठाकुर, नंदलाल रौशन, रंजीत सिंह, शिवम त्रिपाठी, पुष्पा मिश्रा, दीपक साहा, रुद्र कुमार सिंह, मनोज गुप्ता, कुमार संकल्प, विनोद कुमार यादव, नजीर राही, नश्तर शहूदी, जातिब हयाल, विनय जायसवाल, चंद्रकिशोर चौधरी, मुज्तर इफ़्तेखारी, मंजू तिलक, देवमित्र चक्रवर्ती, रणजीत भारती, नंदू बिहारी, अंबर सिद्दीकी, यूसुफ अख़्तर, मुश्ताक जैर, राधा गुप्ता, सुरेंद्र सिंह तथा सूरज रजक उपस्थित रहे।

लायंस क्लब जयपुर मेट्रो ने किया नि:शुल्क भोजन वितरण

जयपुर. शाबाश इंडिया। लायंस क्लब जयपुर मेट्रो के तत्वावधान में एमजेएफ लायन अनिल सोगानी एवं लायन कुसुम सोगानी ने अपने सुपुत्र रजत सोगानी के जन्मदिवस के अवसर पर निर्मल विवेक मानसिक दिव्यांग विद्यालय, जेएलएन मार्ग, जयपुर में नि:शुल्क भोजन वितरण सेवा का आयोजन किया। कार्यक्रम के दौरान विद्यालय के बच्चों को स्नेह एवं आत्मीयता के साथ भोजन वितरित किया गया। बच्चों के साथ समय बिताकर और उनके चेहरों पर प्रसन्नता देखकर उपस्थित सदस्यों ने सेवा के वास्तविक आनंद का अनुभव किया। इस अवसर पर बच्चों के उज्ज्वल भविष्य एवं उत्तम स्वास्थ्य की मंगलकामनाएं भी व्यक्त की गईं। सेवा कार्य में लायन अनिल सोगानी, लायन कुसुम सोगानी, लायन निर्मल कुमार संघी, लायन सरला संघी, लायन नेमी पाटनी, लायन मधु पाटनी, लायन रमेश सेठी, लायन अशोक गंगवाल, लायन अनिला गंगवाल एवं लायन नमोकार जैन ने उपस्थित होकर सक्रिय सहभागिता निभाई तथा भोजन वितरण में सहयोग प्रदान किया। क्लब की ओर से अनिल सोगानी एवं कुसुम सोगानी का अभिनंदन करते हुए कहा गया कि उन्होंने अपने पुत्र रजत सोगानी के जन्मदिवस को सेवा एवं मानवता के कार्य से जोड़कर समाज के लिए प्रेरणादायी उदाहरण प्रस्तुत किया है। इस अवसर पर क्लब पदाधिकारियों ने कहा कि ऐसे सेवा प्रकल्प लायंस इंटरनेशनल के ध्येय वाक्य ''हम सेवा करते हैं'' को सार्थक रूप से चरितार्थ करते हैं तथा समाज में सेवा, संवेदना एवं मानवीय मूल्यों को मजबूत बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

संघे शक्ति कलौ युगे : आचार्य आनंद ऋषिजी ने संघ को रखा सर्वोपरि: युवाचार्य महेन्द्र ऋषिजी

तप आराधना में बढ़े साधकों के कदम, साध्वी सोम्याजी 19 और नाव्याश्री 8 उपवास के साथ बड़ी तपस्या की ओर अग्रसर

भीलवाड़ा. शाबाश इंडिया

आचार्य आनंद ऋषिजी महाराज की 126वीं जन्मजयंती के उपलक्ष्य में चल रहे नौ दिवसीय आनंद जन्मोत्सव के छठे दिन शांतिभवन में आयोजित विशाल धर्मसभा में ''संघे शक्ति कलौ युगे'' विषय पर श्रमणसंघीय युवाचार्य महेन्द्र ऋषिजी ने राष्ट्रसंत आचार्य आनंद ऋषिजी महाराज के जीवन एवं संघ निर्माण में उनकी दूरदर्शी भूमिका को रेखांकित करते हुए कहा कि संघ की वास्तविक शक्ति संख्या, पद या विस्तार में नहीं, बल्कि एकता, परस्पर विश्वास, समन्वय एवं संघहित के लिए त्याग की भावना में निहित है। युवाचार्यश्री ने कहा कि जिनवाणी केवल श्रवण या ज्ञान-संचय का विषय नहीं, बल्कि भीतर के विकारों को रूपांतरित करने वाली शक्ति है। भगवान महावीर की वाणी ने क्रोध, अहंकार, कपट एवं लोभ जैसे विकारों को बदलने का मार्ग दिखाया। आचार्य आनंद ऋषिजी ने इसी ज्ञान की परिवर्तनकारी शक्ति को पहचाना और ज्ञान-साधना को अपने जीवन का आधार बनाते हुए उसे व्यापक समाज एवं संघ के लिए उपयोगी बनाया। उन्होंने कहा कि गुरु रत्न ऋषिजी के देवलोकगमन के समय आचार्यश्री मात्र 27 वर्ष के थे। गुरु-संरक्षण से वंचित होने के बाद उन्होंने युवावस्था की ऊर्जा को आत्मसंयम एवं साधना में लगाया। आयंबिल को इंद्रियनिग्रह का माध्यम बनाया और अध्ययन को जीवन का अनुशासन। उनका तप किसी उपलब्धि के प्रदर्शन के लिए नहीं, बल्कि स्वयं पर विजय प्राप्त करने के लिए था। यही आत्मसंयम आगे चलकर उनके व्यक्तित्व की संगठनात्मक दृढ़ता का आधार बना। युवाचार्यश्री ने कहा कि आनंद ऋषिजी ने ज्ञान को कभी व्यक्तिगत संपदा नहीं माना। धार्मिक अध्ययन एवं ज्ञान के प्रसार को व्यवस्थित दिशा देने के लिए उन्होंने 1936 में पाथरडी धार्मिक परीक्षा बोर्ड की स्थापना कराई। बच्चों से लेकर बड़ों तक तथा गृहस्थों से लेकर साधु-साध्वीवृंद तक धार्मिक अध्ययन को व्यवस्थित मंच प्रदान कराया। उनका आग्रह स्पष्ट था कि जैन दर्शन को उसके मौलिक स्वरूप में समझा जाए और व्यक्तिगत आग्रहों से उसकी मूल भावना प्रभावित न हो। संघ निर्माण की यात्रा का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि 1949 के ब्यावर सम्मेलन से लेकर 1952 के सादड़ी सम्मेलन तक विभिन्न संप्रदायों का एक व्यापक संघ के रूप में एकत्रित होना उस समय के महापुरुषों की असाधारण दूरदृष्टि थी। अनेक प्रमुख संतों ने अपने पद एवं अलग अस्तित्व का त्याग किया। उनके सामने प्रश्न यह नहीं था कि एक होने से मेरा क्या रहेगा? बल्कि यह था कि एक होकर संघ का क्या बनेगा? यही सोच संघ निर्माण की आधारशिला बनी। उन्होंने कहा कि आचार्यश्री ने भी व्यक्तिगत पद एवं परंपरागत आग्रहों से ऊपर संघ के सामूहिक निर्णय को महत्व दिया। उनके लिए संघ कोई औपचारिक संगठन नहीं, बल्कि साधना, संस्कार एवं जिनशासन की निरंतरता का माध्यम था। इसलिए जहां व्यक्तिगत पहचान एवं संघहित के बीच चुनाव की स्थिति आई, उन्होंने संघहित को

प्राथमिकता दी। युवाचार्यश्री ने कहा कि संघ की मजबूती में साध्वीवृंद एवं महिला शक्ति की भूमिका को आनंद ऋषिजी ने विशेष महत्व दिया। उन्होंने विभिन्न स्थानों पर रह रही साध्वियों को एकत्र कर संवाद किया और उनकी सामूहिक शक्ति को संघ से जोड़ा। उनका दृष्टिकोण स्पष्ट था कि महिला शक्ति को मजबूत किए बिना समाज एवं संघ की शक्ति पूर्ण नहीं हो सकती। यह दृष्टि आज भी उतनी ही प्रासंगिक है। उन्होंने कहा कि आचार्यश्री का नेतृत्व केवल संगठन खड़ा करने तक सीमित नहीं था। मतभिन्नताओं के बीच भी उन्होंने आत्मीयता बनाए रखी। उनके विचारों से असहमति रखने वाले लोग भी रहे, लेकिन उन्होंने कटुता, निंदा एवं प्रतिशोध को अपने व्यवहार का आधार नहीं बनाया।